INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

MPPSC-PCS

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

भाग – 1

भारत और मध्यप्रदेश का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"MPPSC -PCS (Madhya Pradesh Public Service Commission) (प्रारंभिक परीक्षा हेतु)"*** *को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* ***मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)"*** *भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/yqtoiy

Online order करें - https://bit.ly/3AAJwpU

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

भारत का इतिहास (संकल्पना एवं विचार)		
क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	प्रचीन भारत की ज्ञान परंपरा • वेद एवं उपनिषद • आरण्यक , ब्राह्मण ग्रन्थ ,षड्दर्शन (धर्म) • स्मृतियाँ, ऋत सभा समिति • गणतंत्र, वर्णाश्रम, पुरुषार्थ, ऋण संस्कार • पञ्चमहायज्ञ, कर्म का सिद्धांत, • बोद्धिसत्व एवं तीर्थकर	1
2.	सिन्धु घाटी सभ्यता • सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ • भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल • महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं एवं घटनाएँ • सिन्धु-सभ्यता के प्रमुख बन्दरगाह	23
3.	वैदिक काल • साहित्यिक स्त्रोत • पुरातात्विक स्त्रोत • ऋग्वैदिक काल एवं उत्तरवैदिक काल • प्रशासनिक संस्थाएँ	28
4.	धार्मिक आंदोलन • उदय के कारण • बौद्ध धर्म • जैन धर्म • वैष्णव धर्म	35
5.	मौर्य काल • राजनीतिक इतिहास • चन्द्रगुप्त मौर्य (321 – 298 ई.पू.) • बिन्दुसार (298-273 ई.पू.) • अशोक महान	41
6.	मौर्योत्तरकाल • कुषाण वंश • सातवाहन राजवंश	44

7.	गुप्त वंश • गुप्त वंश की उत्पत्ति • गुप्त वंश का पतन • गुप्त काल की प्रमुख साहित्यिक रचनायें • गुप्तकालीन नाटक एवं नाटककार	51
8.	अन्य महत्वपूर्ण वंश • चालुक्य वंश • पल्लव राजवंश • चोल राजवंश	54
9.	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु कला • सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं • भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य / नर्तक • भारत के प्रमुख लोकनृत्य • प्रसिद्ध वाद्य यंत्र एवं वादक • भारतीय चित्रकला • भारतीय नृत्य कलाएँ • साहित्य , पर्व एवं उत्सव	65
10.	प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास • प्राचीन भारतीय साहित्य • प्राचीन भारत की प्रमुख पुस्तकें • प्रमुख साहित्यिक रचनायें	92
	<u>मध्यकालीन भारत</u>	
1.	अरबों का भारत में आक्रमण	99
2.	दिल्ली सल्तनत • प्रमुख सल्तनत शासकों की उपलब्धियाँ • बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य	102
3.	मुग़ल साम्राज्य • बाबर का शासन काल (1526 – 1530 ई.) • हुमायूँ (1530 ई. - 1556 ई.) • शेरशाह सूरी (1540 ई. - 1545 ई.) • अकबर (1556 – 1605 ई.)	115

	• शाहजहाँ (1627 ई. - 1658 ई.) • औरंगजेब (1658 – 1707 ई.)	
4.	मध्यकाल में कला एवं वास्तु कला	120
5.	भक्ति तथा सूफी आंदोलन • भक्ति आंदोलन • भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत	128
	<u>आधुनिक भारत का इतिहास</u>	
1.	यूरोपीय कम्पनियों का आगमन • पुर्तगालियों के पतन के कारण • बंगाल में ब्रिटिश फैक्ट्रियों की स्थापना	134
2.	मुग़ल साम्राज्य का पतन • उत्तरकालीन मुग़ल शासक	139
3.	मराठा साम्राज्य • शिवाजी की प्रारम्भिक विजय • शिवाजी का प्रशासन • आंग्ल-मराठा युद्ध	142
4.	गवर्नर, गवर्नर जनरल, वायसराय एवं उनके कार्य	149
5.	1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह • राजनीतिक – धार्मिक आंदोलन • ब्रिटिश भारत में जनजातीय आंदोलन • भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह	156
6.	1857 ई. की क्रांति • कारण एवं परिणाम • विद्रोह का स्वरूप • विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण	160
7.	भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय	169
8.	19वीं तथा 20वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक -धार्मिक सुधार आंदोलन • विभिन्न नेता एवं संस्थाएं	172

9.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन • राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण • कांग्रेस की स्थापना के वास्तविक उद्देश्य • कांग्रेस की स्थापना के संबंध में विवाद • स्वदेशी आंदोलन 1905 • स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव • क्रांतिकारी विचारधारा • क्रांतिकारी आंदोलन का पतन	180
10.	स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन • 1945 -1947 के बीच का भारत • देशी रियासतों का एकीकरण • राज्यों का भाषायी पुनर्गठन • नेहरु युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास	204
	<u>मध्य प्रदेश का इतिहास</u>	
1.	मध्य प्रदेश के प्राचीन इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ और प्रमुख राजवंश • पाषाणकल • आद्ध्य ऐतिहासिक काल • ऐतिहासिक काल	219
2.	प्राचीन काल के प्रमुख राजवंश एवं उनका योगदान • मध्यप्रदेश का आधुनिक इतिहास एवं प्रमुख राजवंश	222
3.	मध्यप्रदेश में 1857 की क्रांति	229
4.	स्वतंत्रता आंदोलन में मध्यप्रदेश का योगदान • मध्यप्रदेश में हुए प्रमुख राष्ट्रीय आंदोलन • मध्यप्रदेश की रियासतें • मध्यप्रदेश का पुनर्गठन • मध्यप्रदेश की प्रमुख कलाएँ और स्थापत्य कला	231

5.	मध्यप्रदेश की जनजातियां एवं बोलियां • जनजाति • मध्य प्रदेश की बोलियां	238
6.	मध्य प्रदेश के प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटन स्थल • मध्य प्रदेश की पर्यटन नीति • मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थल • मध्य प्रदेश के प्रमुख जैन पर्यटक स्थल • मध्य प्रदेश के किले • अन्य इमारतें • मध्यप्रदेश की गुफाएं • मध्यप्रदेश की प्रमुख समाधि एवं मकबरे • मध्य प्रदेश के संग्रहालय	244
7.	मध्य प्रदेश के प्रमुख जनजाति व्यक्तित्व • मध्यप्रदेश के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के उपनाम	249
8.	मध्य प्रदेश के प्रमुख त्यौहार लोक संगीत लोक कलाएं एवं लोक साहित्य • मध्य प्रदेश के प्रमुख त्यौहार	252
9.	मध्य प्रदेश के प्रमुख मेले • मध्य प्रदेश के प्रमुख समारोह • मध्य प्रदेश के लोक संगीत • बुंदेलखंड के लोक गायन	253
10.	मध्य प्रदेश की प्रमुख लोक कलाएं • बुंदेलखंड के लोक नृत्य • आदिवासी लोकनृत्य	260
11.	मध्य प्रदेश के लोक नाट्य • मालवा क्षेत्र के लोकनाट्य • निमाड़ के लोकनाट्य • बघेलखंड के लोकनाट्य • मध्य प्रदेश के प्रमुख चित्रकार • मध्य प्रदेश के प्रमुख साहित्यकार व उनकी कृतियां	262
12.	मध्य प्रदेश विविध (Prelims Special)	268

अध्याय – I

प्राचीन भारत की ज्ञान परम्परा

वेद एवं उपनिषद

वेदान्त ज्ञानयोग का एक स्रोत है जो व्यक्ति को ज्ञान प्राप्ति की दिशा में उत्प्रेरित करता है। इसका मुख्य स्रोत उपनिषद है जो वेद ग्रंथों और वैदिक साहित्य का सार समझे जाते हैं। **उपनिषद** वैदिक साहित्य का अंतिम भाग है, इसीलिए इसको **वेदान्त** कहते हैं। कर्मकांड और उपासना का मुख्यतः वर्णन मंत्र और ब्राह्मणों में है, ज्ञान का विवेचन **उपनिषदों** में।

'वेदान्त' का शाब्दिक अर्थ है – 'वेदों का अंत' (अथवा सार)।

वेदान्त की तीन शाखाएँ जो सबसे ज्यादा जानी जाती हैं वे हैं: **अद्वैत वेदान्त, विशिष्ट अद्वैत और द्वैत**।

आदि शंकराचार्य, रामानुज और श्री **माध्वाचार्य** जिनको क्रमशः इन तीनों शाखाओं का प्रवर्तक माना जाता है, इनके अलावा भी ज्ञानयोग की अन्य शाखाएँ हैं। ये शाखाएँ अपने प्रवर्तकों के नाम से जानी जाती हैं-

जिनमें भास्कर, वल्लभ, चैतन्य, निम्बार्क, वाचस्पति मिश्र, सुरेश्वर और विज्ञान भिक्षु। आधुनिक काल में जो प्रमुख वेदान्ती हुये हैं उनमें रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, अरविंद घोष, स्वामी शिवानंद स्वामी करपात्री और रमण महर्षि उल्लेखनीय हैं। ये आधुनिक विचारक अद्वैत वेदान्त शाखा का प्रतिनिधित्व करते हैं। दूसरे वेदान्तों के प्रवर्तकों ने भी अपने विचारों को भारत में भलिभांति प्रचारित किया है, परन्तु भारत के बाहर उन्हें बहुत कम जाना जाता है। संत में भी ज्ञानेश्वर महाराज, तुकाराम महाराज आदि संत पुरुषों ने वेदान्त के ऊपर बहुत ग्रंथ लिखे है आज भी लोग संतों के उपदेशों के अनुकरण करते हैं।

अद्वैतवाद – इसमें ब्रह्म का विवेचन निर्गुण रूप में किया गया है। इसके प्रमुख दार्शनिक शंकराचार्य हैं।

द्वैतवाद – इसमें ब्रह्म को सगुण ईश्वर के रूप में विवृत किया गया है। रामानुज तथा माध्वाचार्य इस शाखा के प्रमुख दार्शनिक हैं। जिनके मत क्रमशः विशिष्टाद्वैत एवं द्वैत कहे जाते हैं।

उपनिषद

विद्वानों ने उपनिषद (upanishad) शब्द की व्युत्पत्ति उप+ नि + षद के रूप में मानी है। इसका अर्थ है कि जो ज्ञान व्यवधान रहित होकर निकट आये , जो ज्ञान विशिष्ट तथा संपूर्ण हो तथा जो ज्ञान सच्चा हो वह निश्चित ही उपनिषद(upanishad कहलाता है।

भगवद् गीता

भगवद् गीता या गीता का भारतीय विचारधारा के इतिहास में लोकप्रियता की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज भी यह हिन्दुओं का सबसे पवित्र एवं सम्मानित ग्रंथ है। गीता मूलतः महाभारत के भीष्मपर्व का अंश है। इसमें महाभारत युद्ध के अवसर पर कर्त्तव्यविमुख एवं भयभीत हुए अर्जुन को भगवान कृष्ण द्वारा किये गये उपदेशों का संग्रह है। इसकी शिक्षा में एक उदार समन्वय की भावना है, जो हिन्दू विचारधारा की सर्वप्रमुख विशेषता रही है। इसमें प्रत्येक धर्म को मानने वाले के लिये रोचक एवं महत्त्वपूर्ण सामग्री मिल जाती है। **डॉ.राधाकृष्णन** के शब्दों में यह किसी सम्प्रदाय विशेष की पुस्तक नहीं है, अपितु संपूर्ण मानव समाज की सांस्कृतिक निधि है, जो हिन्दू धर्म को उसकी पूर्णता में उपस्थित करती है

आरण्यक

आरण्यक का परिचय

वैदिक वाङ्मय के अनुसार आरण्यक ब्राह्मण ग्रन्थों एवं उपनिषदों को जोड़ने वाली कड़ी है। संहिताओं के अन्तिम भाग ब्राह्मण ग्रन्थ हैं और इनमें यज्ञों के दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष का जो अंकुरण हुआ है, उसका पल्लवित रूप आरण्क ग्रन्थ हैं।

इनमें उस विषय का और विस्तृत विवेचन हुआ है। इसका ही सुविस्तृत रूप उपनिषदें हैं। वेद की जितनी शाखायें शास्त्रों में निर्दिष्ट हैं वे सभी प्राप्त नही होती हैं।

आरण्यक शब्द एवं अर्थ का विचार

आरण्यक का अर्थ है **अरण्ये भवम् आरण्यकम्** इस अर्थ में अरण्य शब्द से तत्रभवः (पाणिनि के अष्टाध्यायी सूत्र संख्या ४3.५3) इस सूत्र से भव अर्थ मे ठक् प्रत्यय होने पर आरण्यक शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ अरण्य (वन, जंगल) में होने वाला तत्त्व है।

आरण्यकों का महत्त्व

वैदिक तत्त्व मीमांसा के इतिहास में आरण्यकों का विशेष महत्त्व स्वीकार किया जाता है। जिस प्रकार दही से मक्खन, मलयपर्वत से चन्दन और ओषधियों से अमृत प्राप्त होता है।

इनमें यज्ञ के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन किया गया है। इनमें मुख्य रूप से **आत्मविद्या और रहस्यात्मक विषयों** के विवरण हैं। वन में रहकर स्वाध्याय और धार्मिक कार्यों में लगे रहने वाले वानप्रस्थ आश्रमवासियों के लिए इन ग्रन्थों का प्रणयन हुआ है।

आरण्यकों का उद्भव

वैदिक संहिताओं के पश्चात् क्रम में ब्राह्मण ग्रन्थ आते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों के बाद आरण्यक ग्रन्थ आते हैं और उसके बाद उपनिषद्। **आरण्यक, ब्राह्मण ग्रन्थों के पूरक हैं।** आरण्यकों का प्रारम्भिक भाग ब्राह्मण हैं और अन्तिम भाग उपनिषद् हैं। ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् इतने मिश्रित

हैं कि उनके मध्य किसी प्रकार की सीमा रेखा खींचना अत्यन्त कठिन है।

आरण्यकों के उद्भव पर एक दो तर्कपूर्ण मतों पर भी विचार करना चाहिए। कुछ पाश्चात्य मतों के अनुसार यह कह सकते हैं कि ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित यज्ञविधि अत्यन्त कष्टसाध्य, दुर्बोध और नीरस होने के कारण अरुचिकर होती जा रही थी।

आत्मिक शान्ति के लिए आध्यात्म की आवश्यकता अनुभव की गई और स्थूल द्रव्यमय यज्ञ से सूक्ष्म आध्यात्म-यज्ञ की ओर प्रवृत्ति हुई। दूसरी ओर दुर्बोधता से बचने के लिए आरण्यकों की रचना की गई।

*दूसरे पक्ष पर यदि विचार करें तो आश्रम चतुष्टय नियमानुसार **गृहस्थ, ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास** इनके चार भेद हैं और वेद के भी चार भाग हैं- **संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् ।***

*इनका क्रमशः वर्गीकरण करें तो **ब्रह्मचर्याश्रम** में वेदाध्ययनगत ब्राह्मण ग्रन्थ विहित कर्मकाण्डों के प्रतिपादन हेतु गृहस्थाश्रम है और **वानप्रस्थाश्रमवासी** के लिये आरण्यक ग्रन्थ तथा संन्यासाश्रम के लिये उपनिषद् हैं।*

आरण्यकों के रचयिता

*वैदिक ज्ञान राशि के अन्तर्गत आरण्यक ब्राह्मण ग्रन्थों का ही एक भाग है। इन ब्राह्मण ग्रन्थों के भी रचयिता भिन्न-भिन्न ऋषि हैं, अतः आरण्यकों के रचयिता ब्राह्मण के रचनाकार ही माने जाते हैं। कुछ आरण्यकों के रचनाकार इस प्रकार हैं- **ऐतरेय ब्राह्मण** के रचनाकार महिदास ऐतरेय हैं।*

*वही ऐतरेय आरण्यक के भी रचनाकार हैं ऐसा माना जाता है कि ऐतरेय आरण्यक के **चतुर्थ आरण्यक** के प्रवक्ता आश्वलायन और पञ्चम आरण्यक के प्रवक्ता शौनक ऋषि हैं।*

आरण्यकों का प्रतिपाद्य विषय

***वैदिक वाङ्मय** के अनुसार तथा **आरण्यक साहित्य** के अवलोकन के पश्चात् आरण्यकों का प्रतिपाद्य विषय आत्मदर्शन, परमात्मदर्शन, आध्यात्मिक ज्ञान आदि ही मानना समुचित होगा।*

आरण्यक ग्रन्थों में प्राणविद्या की महिमा का विशेष प्रतिपादन किया गया है । यहाँ प्राण को कालचक्र बताया गया है। दिन और रात्रि प्राण एवं अपान हैं ।

***तैत्तिरीयारण्यक में यज्ञोपवीत** का महत्त्व बताया गया है। यज्ञोपवीत धारण करके जो यज्ञ, पठन आदि किया जाता है, वह सब यज्ञ की श्रेणी में आता है।*

आरण्यकों में ऐतिहासिक तथ्यों का भी अत्यल्प प्रयोग हुआ है। गंगा-यमुना के मध्यवर्ती प्रदेश को आरण्यकों में अत्यन्त पवित्र बताया गया है। इसी भाग में कुरुक्षेत्र और खाण्डव वन भी है।

3.2.6 समुपलब्ध आरण्यक ग्रन्थ

*सम्प्रति वैदिक साहित्य के प्रचलित लेखक **आचार्य बलदेव उपाध्याय, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र** आदि ने उपलब्ध आरण्यकों की **संख्या 6** मानी है। **आचार्य भगवद्दत्त जी एवं आचार्य वाचस्पति गैरोला** ने समुपलब्ध आरण्यकों की **संख्या 8** मानी है।*

ये निम्नवत् हैं-

1. ***ऋग्वेद के आरण्यक** - (क) ऐतरेय आरण्यक (ख) शांखायन आरण्यक*
2. ***शुक्ल यजुर्वेद के आरण्यक** - (क) बृहदारण्यक - यह माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं में प्राप्य है ।*
3. ***कृष्ण यजुर्वेद के आरण्यक** - (क) तैत्तिरीय आरण्यक (ख) मैत्रायणी आरण्यक*
4. ***सामवेद के आरण्यक** - (क) तवलकार आरण्यक (ख) छान्दोग्य आरण्यक*

   *(सामवेद की **जैमिनि शाखा** का तवलकारारण्यक है। इसको जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण भी कहते हैं। सामवेद की कौथुम शाखा का पृथक् आरण्यक नहीं है। **छान्दोग्य उपनिषद्** कौथुम शाखा से सम्बद्ध है। इसके ही कुछ अंशों को छान्दोग्य आरण्यक कहा जाता है ।)*
5. ***अथर्ववेद के आरण्यक** - (क) गोपथ आरण्यक*

3. 3 ऋग्वेद के आरण्यक

वैदिक साहित्यानुसार चरणव्यूह, पातञ्जल महाभाष्य श्रीमद्भागवत आदि ग्रन्थों में निर्दिष्ट ऋग्वेद की कुल 21 शाखाओं में से वर्तमान में कतिपय शाखा तथा कतिपय ब्राह्मण ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं, जो इस प्रकार हैं-

***ऐतरेय आरण्यक**, यह ऋग्वेद की ऐतरेय शाखा से सम्बन्धित है।*

***शांखायन आरण्यक**, यह ऋग्वेद की शांखायन शाखा अपर नाम कौषतकीय शाखा से सम्बद्ध है।*

3. 3. 1 ऐतरेय आरण्यक

इसका सम्बन्ध ऋग्वेद से है। यह ऐतरेय ब्राह्मण का ही परिशिष्ट है। ऐतरेय के अन्दर पाँच मुख्य अध्याय (आरण्यक) हैं, इन्हें प्रपाठक भी कहा जाता है। प्रपाठक अध्यायों में विभक्त हैं। इसके प्रथम तीन आरण्यक के रचयिता ऐतरेय, चतुर्थ के आश्वलायन तथा पंचम के शौनक माने जाते हैं।

डॉक्टर कीथ इसे निरुक्त की अपेक्षा अर्वाचीन मानकर इसका रचनाकाल षष्ठ शताब्दी विक्रम पूर्व मानते हैं, परन्तु यह निरुक्त से प्राचीनतम है । ऐतरेय के प्रथम तीन आरण्यकों के कर्ता महिदास हैं इससे उन्हें ऐतरेय ब्राह्मण का समकालीन मानना न्यायसंगत है।

इसका प्रकाशन 1876 ई. में सत्यव्रत सामश्रमी ने किया था। तदनन्तर ए. बी. कीथ ने 1909 ई. में अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया था । इस पर सायण और शंकराचार्य ने भी भाष्य लिखे हैं। इस आरण्यक के विशिष्ट प्रसंग

प्राणविद्या, प्रज्ञा का महत्त्व, आत्मस्वरूप का वर्णन, वैदिक अनुष्ठान, स्त्रियों का महत्त्व, शास्त्रीय महत्त्व और आचार संहिता के बारे में विस्तार से वर्णन है।

प्रत्येक आरण्यक (अध्याय) इसके निम्नवत् हैं -

प्रथम आरण्यक - इसमें महाव्रत का वर्णन है। यह महाव्रत गवामयन सत्र का ही अंश है। इसमें प्रयोज्य मन्त्रों की आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक व्याख्या की गई है।

द्वितीय आरण्यक - इसके प्रथम 3 अध्यायों में उक्थ (निष्केवल्य, प्राणविद्या और पुरुष) का विवेचन है।

तृतीय आरण्यक - इसको संहितोपनिषद् कहते हैं। इसमें संहिता, पदपाठ, क्रमपाठ तथा स्वर और व्यंजनों के आदिस्वरूप का विवेचन है।

चतुर्थ आरण्यक - इसमें महानाम्नीऋचाओं का संकलन है, जो महाव्रत में बोली जाती हैं।

पंचम आरण्यक - इसमें निष्केवल्य शस्त्र (मन्त्रों) का वर्णन है ।

शांखायन आरण्यक

इसका भी सम्बन्ध ऋग्वेद से है। यह ऐतरेय आरण्यक के समान ही पन्द्रह अध्यायों तथा 137 खण्डों में विभक्त है, इसका एक अंश तीसरे अध्याय से छठें अध्याय तक **कौषीतकि उपनिषद्** के नाम से प्रसिद्ध है।

इसके सातवें और आठवें अध्याय को संहितोपनिषद् कहते हैं। इसी को कौषीतकि आरण्यक भी कहा जाता है। **1922 ई. में श्रीधर पाठक ने सम्पूर्ण शांखायन ब्राह्मण** को प्रकाशित किया है।

आरण्यक के विशिष्ट प्रसंग को इस प्रकार निरुपित किया जा सकता है।

1) प्रत्यक्ष अग्निहोत्र की अपेक्षा आध्यात्मिक अग्निहोत्र का महत्त्व

आरण्यक में बताया गया है कि **बाह्य अग्निहोत्र** की अपेक्षा आभ्यन्तर (आध्यात्मिक) अग्निहोत्र का बहुत अधिक महत्त्व है। जो साधक आन्तरिक आत्मतत्त्व को न जानकर केवल बाहरी यज्ञ करता है।

2) तत्त्वमसि और अहं ब्रह्मास्मि

वेदान्तदर्शन के महावाक्य ये दोनों सुभाषित इस आरण्यक में हैं। तत् त्वम् असि वह ब्रह्म ही जीवरूप में है। अहं ब्रह्म अस्मिमैं ब्रह्मरूप हूँ, यह अनुभूति साधना की पराकाष्ठा है।

3) अहं ब्रह्मास्मि का महत्त्व -

अहं ब्रह्मास्मि महावाक्य है। यही सर्वोच्च उपदेश है। यही **ऋचाओं, यजुष्, साम और अथर्वा का शिरोभाग** है। जो इसको जाने बिना वेदाध्ययन करता है, वह मूर्ख है।

4) अर्थज्ञान का महत्त्व

अर्थज्ञान के **बिना वेदों का अध्ययन मूर्खता** है। जो वेदार्थ का ज्ञानी है, उसके सारे पाप कट जाते हैं और वह मोक्ष का अधिकारी होता है।

5) आचार्यों की वंश-परम्परा

इसमें **पन्द्रह अध्याय** में आचार्यों की वंशानुक्रम परम्परा इस प्रकार दी गई है- स्वयम्भू ब्रह्मा, प्रजापति, इन्द्र, विश्वामित्र, देवरात, साकमश्व, व्यश्व, विश्वमना, सुम्नयु, बृहदिवा, प्रतिवेश्य, सोम, सोमपा, सोमापि, प्रियव्रत, उद्दालक, आरुणि, कहोल, कौषीतकि और गुण शांखायन ।

इसके प्रत्येक अध्यायों में विषय निम्नलिखित रूप में प्राप्त होते हैं।

प्रथम अध्याय और द्वितीय अध्याय इसमें **ऐतरेय आरण्यक** के तुल्य महाव्रत का वर्णन है ।

तृतीय अध्याय से षष्ठ अध्याय - **कौषीतकि उपनिषद्** है । इसका विवरण उपनिषद् प्रकरण में है।

सप्तम अध्याय और अष्टम अध्याय - **संहितोपनिषद्** । इसका भी विवरण उपनिषद् प्रकरण में है।

नवम अध्याय- इसमें **प्राण की श्रेष्ठता** का वर्णन है।

दशम अध्याय- इसमें आध्यात्मिक **अग्निहोत्र का सांगोपांग** वर्णन है ।

एकादश अध्याय इसमें **मृत्यु के निराकरण** के लिए एक विशेष योग का विधान है

द्वादश अध्याय- इसमें समृद्धि के लिए **बिल्व (बेल)** के फल से एक मणि बनाने का व

त्रयोदश अध्याय- इसमें **श्रवण-मनन** आदि के लिए शरीर शुद्धि, तपस्या, श्रद्धा और दम आदि की आवश्यकता का वर्णन किया गया है।

चतुर्दश अध्याय- इसमें **अहं ब्रह्मास्मि और वेदों के अर्थज्ञान** का महत्त्व बताया गया है।

पञ्चदश अध्याय- इसमें **आचार्यों का वंशानुक्रम** दिया गया है।

3.4 यजुर्वेद के आरण्यक

वैदिक साहित्य में **100 व 101 यजुर्वेद की शाखा** बतायी गयी है जिसमें यजुर्वेद के दो सम्प्रदाय अथवा भेद के कारण **कृष्ण यजुर्वेद** के 86 तथा **शुक्ल यजुर्वेद** के 15 शाखाओं सहित कुल 101 का उल्लेख है जो निम्नवत् हैं-

3.4.1 शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं का आरण्यक

शुक्ल यजुर्वेद के 15 शाखाओं में से केवल शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ ही **माध्यन्दिन एवं काण्व** दोनों का प्रतिनिधित्व करता है केवल कुछ अध्यायों का अन्तर है, किन्तु इन दोनों का आरण्यक एक है— बृहदारण्यक ।

बृहदारण्यक- वस्तुतः वैदिक साहित्यानुसार यह शतपथ ब्राह्मण के अन्तिम 14वें काण्ड के अन्त में दिया गया है। इसका प्रथम प्रकाशन 1889 ई. में आटो वोहट्लिङ्क ने किया था।

3.4.2 कृष्ण यजुर्वेदीय आरण्यक

ब्रह्म सम्प्रदाय कृष्ण यजुर्वेद के 86 शाखाओं में से कुछ ही शाखाओं पर आरण्यक उपलब्ध हैं,

यथा- (क) तैत्तिरीय आरण्यक, (ख) मैत्रायणी आरण्यक ।

गुण का प्राधान्य रहा, इसीलिए उन्हें शासन-व्यवस्था लोक-रक्षा तथा शौर्य के कार्य सौंपे गए।

इस प्रकार **सतोगुण प्रधान ब्राह्मण, रजोगुण प्रधान क्षत्रिय, तमोमिश्रित रजोगुण प्रधान वैश्य तथा तमोगुण प्रधान शूद्र** होता है ।

(5) जन्म का सिद्धान्त (Theory of Birth) –

कुछ विद्वानों का कथन है कि **वर्ण का आधार जन्म है, न कि कर्म** । जो व्यक्ति जिस परिवार में जन्म लेता है उसी के अनुसार उसके वर्ण का निर्धारण होता है ।

डॉ. घुरिये का कथन है कि **प्रारम्भ में केवल 'आर्य' और 'दास' ये दो वर्ण थे।** आर्य लोग जहां भी पाए गए वहां उन लोगों ने वहां के आदिवासियों को पराजित किया ।

आर्यों ने यहां के मूल निवासियों को भी 'दास' कहकर पुकारा और अपने तथा उनके बीच अन्तर स्पष्ट करने के लिए 'वर्ण' शब्द का प्रयोग किया ।

वर्ण-व्यवस्था के निर्णायक कारण या आधार के सम्बन्ध में विद्वानों में काफी मतभेद है। परन्तु इन मतभेदों का विश्लेषण करके हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं

वर्ण और जाति में भेद

वर्ण और जाति के परस्पर सम्बन्धों के आधार पर इन दोनों में पाए जाने वाले अन्तरों को निम्न क्रम से समझा जा सकता है-

वर्ण

'वर्ण'	**जाति (Caste)**
(1) शब्द **संस्कृत की 'वृ' धातु** से बना है जिसका अभिप्राय चुनने या अपनाने से है, अर्थात् वर्ण वह है जिसको व्यक्ति अपने कर्म व स्वभाव अनुसार चुनता है ।	(1) 'जाति' शब्द की व्युत्पत्ति **संस्कृत की 'जन' धातु से हुई** है जिसका अभिप्राय जन्म से है, अर्थात् जाति-व्यवस्था जन्म पर आधारित है ।
(2) वर्ण-व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्ति को अपने कर्म व स्वभाव के अनुसार वर्ण चुनने की स्वतन्त्रता है।	(2) जाति प्रथा में जन्म से प्राप्त होने वाले अधिकारों को विशेष महत्त्व दिया जाता है ।
(3) वर्ण-व्यवस्था **लचीली एवं परिवर्तनशील व्यवस्था** है। ऐसा वर्णन मिलता है कि वैदिक काल में विभिन्न वर्गों में आपस में विवाह होते थे; खान-पान का कोई भेद-भाव नहीं था।	(3) जाति **जन्ममूलक** है और यही कारण है कि यह अपने सदस्यों के विवाह, खान-पान व्यवसाय आदि के प्रति कठोर रुख अपनाती है ।
(4) वर्ण की संख्या केवल चार (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र) है ।	(4) जबकि जातियों की संख्या हजारों में है। जनगणना रिपोर्टों के अनुसार भारत में इस समय लगभग 4,000 से अधिक जातियाँ व उपजातियाँ हैं ।

वर्णों के कर्त्तव्य या 'वर्ण' - धर्म

(Duties of Varnas or 'Varna' Dharma)

हिंदू शास्त्रकारों ने विभिन्न वर्णों के कुछ निश्चित कर्त्तव्यों या 'धर्म' का भी निर्धारण किया है स्मृतियों के अनुसार चारों वर्णों के कुछ सामान्य 'धर्म' या कर्त्तव्य भी हैं जैसे हिन्दू शास्त्रकारों ने विभिन्न वर्णों के कुछ निश्चित कर्त्तव्यों या 'धर्म' का भी निर्धारण की वस्तु लेने से बचना,चरित्र एवं जीवन की पवित्रता को बनाए रखना, इन्द्रियों पर वित प्राणियों को हानि न पहुंचाना, सत्य की खोज करना, अनधिकारपूर्वक किसी दूसरे **नियन्त्रण रखना, आत्मसंयम, क्षमा, ईमानदारी, दान** आदि सद्गुणों का अभ्यास करना । फिर भी प्रत्येक वर्ण के कुछ अलग-अलग कर्त्तव्य या 'धर्म' भी हैं, इन्हीं को **वर्ण-धर्म** कहते हैं ।

मनु के अनुसार ये वर्ण-धर्म निम्न हैं-

(1) द्विजों में श्रेष्ठ ब्राह्मण है । ब्राह्मण का आधार उसकी सात्विक वृत्ति तथा उसका निश्चल स्वभाव है । इसी दृष्टिकोण से मनुस्मृति में ब्राह्मणों के इन गुणकर्मों का उल्लेख या गया है - ब्राह्मण को चाहिए कि वह अपने तिरस्कार को विष के समान समझ हुआ उससे सदा डरता रहे और आदर को अमृत समझता हुआ उसकी सदा कामना करता रहे।

(2) मनु के अनुसार क्षत्रिय का प्रमुख कर्त्तव्य **प्रजा की रक्षा करना, युद्ध करना, दान देना, यज्ञ करना** आदि है।

(3) गाय-बैल आदि पशुओं की रक्षा करना, दान अग्निहोत्र आदि करना, व्यापार करना, ब्याज पर रुपया लेना-देना, और खेती करना - ये वैश्व के कर्त्तव्य कर्म हैं ।

(4) शूद्र का कार्य उपरोक्त तीन वर्णों की **बिना ईर्ष्या के सेवा करना** है ।

व्यक्ति एक ऐसे परिवार में क्यों जन्म लेता है जिसका कि पैशा निम्न है - इस प्रश्न का उत्तर 'कर्म' का सिद्धान्त दे सकता है। भाग्य बड़ा शक्तिशाली है, अपने पूर्वकार्यों के परिणामों से बचना बड़ा कठिन है। यह पूर्वजन्म में किए गए बुरे कर्म ही हैं जोकि पाप को उत्पन्न करने वाले हैं ।

पुरुषार्थ

हिन्दू शास्त्रकारों ने मनुष्य तथा समाज की उन्नति के निमित्त जिन आदर्शों का विधान प्रस्तुत किया उन्हें पुरुषार्थ की संज्ञा दी जाती है। पुरुषार्थों का सम्बन्ध मनुष्य तथा समाज दोनों से है ।

पुरुषार्थों का उद्देश्य मनुष्य के भौतिक तथा आध्यात्मिक सुखों के बीच सामंजस्य स्थापित करना है। भारतीय परम्परा भौतिक सुखों को क्षणिक मानते हुये भी उन्हें पूर्णतया त्याज्य नहीं समझती।

मनुष्य भौतिक सुखों के संयमित उपभोग द्वारा ही आध्यात्मिक सुख प्राप्त करता है । भौतिक सुखों को आध्यात्मिक सुखों की प्राप्ति में साधक माना गया है, बाधक नहीं।

पुरुषार्थ चार हैं:

1. धर्म 2. अर्थ 3. काम 4. मोक्ष

इनमें **अर्थ तथा काम भौतिक सुखों के प्रतिनिधि** हैं जबकि **धर्म तथा मोक्ष आध्यात्मिक सुखों का प्रतिनिधित्व** करते हैं। मोक्ष मानव जीवन का चरम लक्ष्य है जिसकी प्राप्ति में शेष पुरुषार्थ सहायक हैं। मोक्ष की प्राप्ति सभी के लिये सम्भव नहीं है ।

अतः **तीन पुरुषार्थों- धर्म, अर्थ तथा काम के पालन पर ही बल** दिया गया । इन्हें त्रिवर्ग कहा गया है जिनकी प्राप्ति सभी गृहस्थी के लिये सरल है। हिन्दू शास्त्रविदों का यह मत है कि तीनों पुरुषार्थों में कोई विरोध नहीं है ।

1. **धर्म-**

पुरुषार्थों में धर्म का सर्वप्रथम स्थान है जिसे हिन्दू जीवन-दर्शन में सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है । **धर्म शब्द मूलतःधृ धातु से निष्पन्न** होता है जिसका शाब्दिक अर्थ है धारण करना अथवा अस्तित्व बनाये रखना ।

यह सामाजिक व्यवस्था का नियामक है । प्राचीन शास्त्रों में इसकी विशद व्याख्या मिलती है । महाभारत में कहा गया है कि- **धर्म सभी प्राणियों की रक्षा** करता है, सभी को सुरक्षित रखता है।

धर्म की व्यवस्था सभी प्राणियों के कल्याण के लिये की गयी है, जिससे सभी प्राणियों का हित होता है वही धर्म है ।

मनुस्मृति में **धर्म के चार स्रोत कहे गये हैं- वेद, स्मृति, सदाचार तथा आत्मतुष्टि** अर्थात् जो अपनी आत्मा को प्रिय लगे ।

2. **अर्थ-**

प्राचीन भारतीयों की दृष्टि से यह एक व्यापक शब्द था जिससे तात्पर्य उन समस्त **आवश्यकताओं और साधनों** से था जिनके माध्यम से मनुष्य भौतिक सुखों एवं ऐश्वर्य धन, शक्ति आदि को प्राप्त करता है ।

परिधि में वार्ता तथा राजनीति को भी समाहित कर लिया गया था । कृषि, पशुपालन तथा वाणिज्य वार्ता के क्षेत्र हैं । राजनीति का सम्बन्ध राजशासन से है ।

अर्थ के माध्यम से **व्यक्ति भौतिक सुख एवं ऐश्वर्य** को प्राप्त करता है । यह सुख- सुविधा का साधन है।

मृतक तुल्य हैं जबकि धनी व्यक्ति संसार में सुखपूर्वक निवास करते हैं । बृहस्पति ने अर्थ को जगत का मूल स्वीकार किया है।

नीतिशतक में विवृत्त है कि जिसके पास धन है वही कुलीन है, पंडित है, वेदों का ज्ञाता है, गुणवान् है, वक्ता है तथा दर्शनीय है। सभी गुण धन में ही होते हैं।

मनुस्मृति में स्पष्टतः कहा गया है कि धर्मविरुद्ध अर्थ तथा काम का त्याग कर देना चाहिए।आप स्तम्ब भी कहा है कि मनुष्य को धर्मानुकूल सभी सुखों का उपभोग करना चाहिए।

3. **काम-**

मानव-जीवन का **तृतीय पुरुषार्थ काम** है जिसका शाब्दिक अर्थ **इन्द्रिय सुख** से है। किन्तु व्यापक अर्थ में इस शब्द से तात्पर्य मनुष्य की सहज इच्छाओं एवं प्रवृत्तियों से है ।

महाभारत के अनुसार **काम मन तथा हृदय** का वह सुख है जो इन्द्रियों के विषयों से संयुक्त होने पर निसृत होता है। इसी के वशीभूत ही मनुष्य सन्तानोत्पत्ति करता है, गृहस्थ जीवन के विविध आनन्दों को भोगता है तथा एक दूसरे के प्रति आकर्षण रखता है।

हिन्दू शास्त्रकारों ने मानव जीवन में काम के महत्व को स्वीकार करते हुए उस पर धर्म का अंकुश लगाया ।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हिंदू शास्त्रकारों ने **धर्म संवलित काम का आचरण** किये जाने पर ही बल दिया है । इसी से व्यक्ति का सम्यक विकास सम्भव है। काम का उच्छृंखल आचरण व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिये हानिकारक है।

4. **मोक्ष-**

हिन्दू विचारधारा में **मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य स्वीकार** किया गया है जिसकी प्राप्ति सभी का परम लक्ष्य है। मोक्ष का अर्थ है **पुनर्जन्म अथवा आवागमन चक्र** से मुक्ति प्राप्त कर आत्मा का परमात्मा में विलीन हो जाना ।

आत्मा अजर अमर एवं परमात्मा का ही अयश है । शरीर बंधन का कारण है संसार मायाजाल है ।

ज्ञान भक्ति एवं कर्म मोक्ष प्राप्ति के साधन हैं। गीता में इनका समन्वय मिलता है। उपनिषदों में मोक्ष सम्बन्धी विचारधारा का सम्यक् विश्लेषण मिलता है ।

गुरु की इस उक्ति का मनन करते हुए तथा दृढ़तापूर्वक उसका आचरण करते हुए व्यक्ति आत्मसाक्षात्कार कर लेता है तथा इस अवस्था में उसे अहं ब्रह्मास्मि अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूँ की अनुभूति होती है। यही पूर्ण ज्ञान है तथा इसी को मोक्ष कहा गया है। ब्रह्मचर्य आश्रम में ही विद्यार्थी को इसका बोध हो जाता था तथा जीवन पर्यन्त वह अपनी समस्त क्रियाओं को उसी ओर नियोजित करता था ।

पुरुषार्थों के माध्यम से भारतीय मनीषा ने प्रवृत्ति एवं निवृत्ति, आसक्ति एवं त्याग के बीच सुन्दर समन्वय स्थापित किया है। यहाँ काम तथा अर्थ साधन है जबकि धर्म एवं मोक्ष साध्य स्वरूप हैं । त्रिवर्ग में तीनों पुरुषार्थों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है ।

ऋण संस्कार

वैदिक अवधारणा में, जन्म से प्रत्येक मनुष्य के जीवन में तीन ऋण होते हैं जिन्हें उन्हें चुकाना पड़ता है। वे ऋषि ऋण, पितृ* ऋण *और देव* ऋण *हैं।

ऋण शब्द का अर्थ है "कर्ज में होना" जो एक ऋण है जिसे चुकाया जाना है।

मोक्ष को व्यक्ति के अस्तित्व का अंतिम उद्देश्य माना जाता था।

अध्याय – 2

सिन्धु घाटी सभ्यता

सिन्धु घाटी सभ्यता :-

यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।

इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है→

सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।

सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया

वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया

प्रथम नगरीय क्रांति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया

यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।

इस सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।

1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।

जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।

1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।

1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों** की खोज की।

सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -

प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी

भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है ।

मंगोलियन - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।

सिन्धु सभ्यता की तिथि

कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.

ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.

मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

मैके
- मार्शल
- नदी में बाढ़ के कारण
- एस.आर.राव

व्हीलर
- गार्डन चाइल्ड
- बाह्य आक्रमण
- पिगट

जलवायु परिवर्तन
- आरेल स्टाइन
- अमला नन्द घोष

प्राकृतिक आपदा - केन्यू. आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार→

इस सभ्यता का विस्तार **पाकिस्तान और भारत** में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

सुत्कांगेडोर

सोत्काकोह

बालाकोट

डाबर कोट

सुत्कांगेडोर- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है । इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।

सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते है।

मोहनजोदड़ों	हड़प्पा
चन्हूदड़ों	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	रहमान टेरी
आमरी	गुमला
अलीमुराद	जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

हरियाणा- राखीगढ़ी, सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू

पंजाब – कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा रोपड़ (रूपनगर) - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल

कश्मीर - माण्डा

चिनाब नदी के किनारे

सभ्यता का उत्तरी स्थल

राजस्थान - कालीबंगा, बालाथल

तरखान वाला डेरा

उत्तर प्रदेश - आलमगीरपुर

सभ्यता का पूर्वी स्थल

- माण्डी
- बड़गाँव
- हुलास
- **सनौली**

गुजरात

धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, **लोथल,** रोजदिख्वी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार

https://www.infusionnotes.com/

महाराष्ट्र- दैमाबाद

सभ्यता की दक्षिणतम सीमा

फैलाव- त्रिभुजाकार

क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलोमीटर

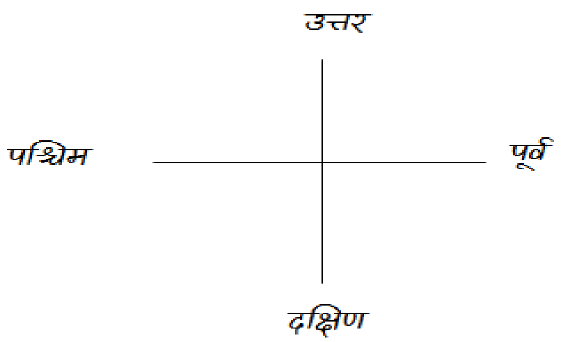

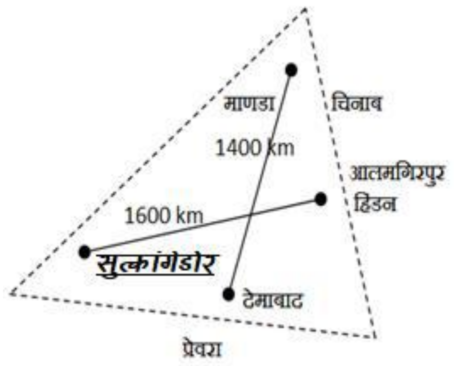

स्थल	**नदियों के नाम**	**उत्खन्न का वर्ष**	**उत्खनन कर्ता**	**वर्तमान स्थिति**
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ों	सिन्धु	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्ध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटदीजी	सिन्धु	1955	फजल अहमद	सिन्ध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)
रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ ज़िला (भारत)
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत).
आलमगीरपुर	हिंड़न	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)
बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ : विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धौलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविन्द्र नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।

सिन्धु सभ्यता के 7 नगर

1. हड़प्पा
2. बनावली
3. मोहनजोदड़ों
4. धौलावीरा
5. चन्हूदड़ों
6. लोथल
7. कालीबंगा

महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं :-

हड़प्पा

रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज **दयाराम साहनी** ने की थी ।

खोज- वर्ष 1921 में

उत्खनन-

1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा ।

1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा

					जीवन में भिक्षुओं के नियम) त्रिपिटक (बुद्ध के उपदेशों का संकलन) के अभिन्न अंग हैं।
द्वितीय संगीति	383 ई.पू.	वैशाली	साबकमीर (सुबुकामी)/ सर्वकामिनी	कालाशोक (शिशुनागवंश)	भिक्षुओं में मतभेद के कारण बौद्धसंघ में विभाजन-(1) स्थविर, (2) महासघिक
तृतीय संगीति	250/2 ई.पू.	पाटलिपुत्र	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अशोक (मौर्य वंश)	अभिधम्म पिटक (दार्शनिकसिद्धांत) का संकलन
चतुर्थ संगीति	प्रथम शताब्दी ईस्वी	कुंडलवन (कश्मीर)	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)	कनिष्क (कुषाण वंश)	बौद्ध धर्म का विभाजन-(1) हीनयान, (2) महायान

<u>जैन धर्म</u>

*जैन शब्द का निर्माण **जिन** से हुआ है जिसका अर्थ होता है – **विजेता***

संस्थापक – ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर

कुल 24 तीर्थंकर हुए

***23वें- पार्श्वनाथ थे** । पार्श्वनाथ काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र थे । पार्श्वनाथ के प्रथम अनुयायी उनकी माता वामा तथा पत्नी प्रभावती थी ।*

जैन धर्म को व्यवस्थित रूप दिया।

*इनके **अनुयायी निर्गन्ध** कहलाये।*

***24वें-तीर्थंकर वर्धमान महावीर** थे ।*

जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी ।

जन्म 540 ई.पू. कुण्डग्राम में ।

बचपन का नाम वर्धमान

पिता- सिद्धार्थ

माता – त्रिशला

पत्नी – यशोदा

पुत्री – प्रियदर्शना (अणोज्जा)

दामाद – जमालि

गृहत्याग 30 वर्ष की आयु में

*ज्ञान प्राप्ति 42 वर्ष की आयु में **जृम्भिक ग्राम** में ऋजुपालिका नदी के किनारे साल वृक्ष के नीचे उन्हें **कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई** ।*

उपदेश- अर्द्ध-मागधी भाषा में

प्रथम उपदेश राजगृह में

प्रथम शिष्य- जमालि

चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना प्रथम भिक्षुणी थी ।

महावीर स्वामी की मृत्यु 468 ई.पू. पावापुरी बिहार में

महावीर शिक्षा प्राकृत भाषा में देते थे ।

जैन धर्म के पंच महाव्रत

सत्य वचन

अस्तेय (चोरी मत करो)

अंहिसा

अपरिग्रह (धन संचय मत करो)

ब्रह्मचर्य

त्रिरत्न (मोक्ष प्राप्ति के साधन)

सम्यक ज्ञान

सम्य दर्शन

सम्यक चरित्र

जैनधर्म में पुनर्जन्म में विश्वास तथा कर्मवाद में विश्वास पर बल

<u>संघ</u>

महावीर ने एक संघ की स्थापना की ।

*इस संघ के **11 अनुयायी** बने जो **गणधर** कहलाये।*

11 में से 10 महावीर की मृत्यु होने से पहले मोक्ष प्राप्त कर चुके थे।

एक ही जीवित था - सुधर्मण

<u>जैन संगीतियां (सभायें)</u>

प्रथम- 300 ई.पू.

पाटलिपुत्र में

चन्द्रगुप्त मौर्य (संरक्षक)

अध्यक्ष – स्थूलभद्र

जैन धर्म दो भागों में विभाजित

***श्वेताम्बर** - सफेद कपड़े वाले*

***दिगम्बर** - नग्न रहने वाले*

12 अंगों का संकलन किया गया था ।

***द्वितीय** - 512 ई.पू. /513/526 ई.पू.*

वल्लभी में

क्षमाश्रवण (संरक्षक)

जैन ग्रंथों का अन्तिम रूप से संकलन

मुख्य बिंदु कुल 11 अंगों को लिपिबद्ध किया गया ।

चोल काल में किसने हिरण्यगर्भ नामक त्यौहार का आयोजन किया था – **लोक महादेवी**

चीन में व्यापारिक दूत भेजनेवाले चोल सम्राट कौन-कौन थे – **राजराज I, राजेन्द्र I, कुलोत्तुंग चोल I**

तंजौर का वृहदीश्वर / राजराजेश्वर मंदिर किस देवता को समर्पित है – **शिव**

गंगैकोण्डचोलपुरम का शिवमंदिर का निर्माण किसके समय में हुआ – **राजेन्द्र प्रथम**

चोलकालीन तमिल के त्रिरत्न कौन थे – कंबन, औट्टक्कुट्टन और **पुगलेंदि**

प्रसिद्ध चोल शासक राजराज प्रथम का मूल नाम क्या था– **अरिमोलिवर्मन**

वह चोल कौन था जिसने श्रीलंका को पूर्ण स्वतंत्रता दी और सिंहल राजकुमार के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया था – **कुलोत्तुंग प्रथम**

प्रश्न - निम्नलिखित में से कौनसा शासक गुर्जर-प्रतिहार राजवंश से संबंधित नहीं है?

A. नागभट्ट द्वितीय
B. महेंद्रपाल प्रथम
C. देवपाल
D. भरत्रभट्ट - प्रथम

उत्तर – D

प्रश्न - निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन प्राचीन भारत की श्रेणी व्यवस्था के बारे में असत्य है?

A. श्रेणी व्यापारियों और कारीगरों का संगठन थी।
B. उत्पादित वस्तुओं की गुणवत्ता और कीमत संबंधित श्रेणी द्वारा निर्धारित की जाती थी।
C. श्रेणी अपने सदस्यों के आचरण पर भी नियंत्रण रखा करती थी ।
D. काँची का कैलाश नाथ मंदिर द्रविड़ शैली का सबसे स्वतंत्र आधार का मंदिर है।

उत्तर - D

"सारांश"

चाणक्य ने अर्थशास्त्र नामक पुस्तक की रचना की।

पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से भी जाना जाता था।

मेगस्थनीज ने इंडिका नामक पुस्तक की रचना की।

अभिलेखों में अशोक को देवानाम प्रियदर्शी कहा गया है।

कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कड़फिसेस था।

चाणक्य के अर्थशास्त्र में सात प्रकार के कर उल्लेखित है।

कुषाण वंश के शासक कनिष्क ने 78 ई. में एक संवत् प्रारंभ किया, जिसे शक संवत् कहा जाता है।

कल्हण द्वारा राजतरंगिणी की रचना की गई।

भारतीयों के लिए महान सिल्क मार्ग कनिष्क ने आरंभ किया था।

सातवाहन वंश के शासन काल में चावल की खेती होती थी।

इत्र बनाने और बेचने वाले स्वयं को गंधिको कहने लगे। "गांधी" शब्द की उत्पत्ति इसी हुई है।

सातवाहनों की शासन प्रणाली एकतांत्रिक थी।

सातवाहन वंश के शासक शातकर्णी प्रथम ने 'दक्षिणाधिपति' की उपाधि धारण की तथा भूमिदान का पहला अभिलेखीय साक्ष्य भी निर्मित करवाया।

गुप्त वंश के समय में भारत 'सोने की चिड़िया' कहलाता था।

काव्यालंकार सूत्र में समुद्रगुप्त का नाम 'चंद्रप्रकाश' मिलता है।

कुमारगुप्त के शासनकाल में ही नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी।

गुप्त काल में मंदिरों का निर्माण ऊँचे चबूतरे पर किया जाता था, तथा छत सपाट होती थी।

गुप्त काल की हरिषेण लिखित चंपू शैली में गद्य-पद्य को मिश्रित रूप में लिखा जाता था।

गुप्तकाल के प्रसिद्ध खगोलशास्त्री द्वारा वराहमिहिर ने वृहत्संहिता तथा पंचासिद्धांतिका ग्रंथों की रचना की।

गुप्तकालीन गणितज्ञ आर्यभट्ट ने आर्यभट्टीय तथा दशमलव प्रणाली की रचना की।

वाग्भट्ट आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टांगहृदय' की रचना की।

आयुर्वेदाचार्य एवं चिकित्सक धनवंतरी चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में था।

चालुक्य वंश की वास्तविक नींव डालने वाला व्यक्ति पुलकेशिन प्रथम था।

चालुक्यों का एहोल का विष्णु मंदिर उड़ते हुए देवताओं की सुंदर मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।

महाबलीपुरम के एकाश्म मंदिर का निर्माण पलल्व राजा नरसिंह वर्मन प्रथम द्वारा किया गया था ।

द्रविड़ शैली की स्थापना पल्लव नरेशों के शासनकाल में हुई।

चोल वंश के संस्थापक विजयालय थे, तथा राजधानी तंजौर थी।

नटराज शिव की काँस्य प्रतिमा का निर्माण चोल शासकों के शासनकाल में हुआ था।

प्रारंभिक परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1. प्रसिद्ध यूनानी राजदूत मेगस्थनीज भारत में किसके दरबार में आए थे?

A. अशोक B. हर्षवर्धन
C. चंद्रगुप्त मौर्य D. हेमू
उत्तर – C

प्रश्न-2. चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने अंतिम दिन कहाँ गुजारे थे?

A. श्रवणबेलगोला B. काशी
C. पाटलिपुत्र D. उज्जैन
उत्तर – A

प्रश्न-3. अशोक ने बौद्ध होते हुए भी हिंदू धर्म में आस्था नहीं छोड़ी, इसका प्रमाण है?

A. तीर्थयात्रा
B. मोक्ष में विश्वास
C. पशु चिकित्सालय खोले
D. 'देवनामप्रिय' की उपाधि
उत्तर – D

प्रश्न-4. बिंबिसार तथा अजातशत्रु के राज्य काल में मगध की राजधानी थी -

A. कौशांबी B. श्रावस्ती
C. राजगीर D. पाटलिपुत्र
उत्तर,- C

प्रश्न-5. पतंजलि किस शुंग का पुरोहित था?

A. अग्निमित्र B. पुष्यमित्र
C. वासुमित्र D. सुज्येष्ठ
उत्तर – B

प्रश्न-6. लिच्छवी दौहित्र किसे कहते हैं?

A. स्कंदगुप्त B. कुमारगुप्त
C. चंद्रगुप्त प्रथम D. समुद्रगुप्त
उत्तर – D

प्रश्न-7. किसके शासनकाल को प्राचीन भारत का स्वर्णिम काल कहते हैं?

A. गुप्त शासन B. मौर्य शासन
C. मुगल शासन D. वर्धन शासन
उत्तर – B

प्रश्न-8. गुप्तोत्तर युग में प्रमुख व्यापारिक केंद्र था

A. कन्नौज B. उज्जैन
C. धार D. देवगिरी
उत्तर – A

प्रश्न-9. कन्नौज पर लंबे समय तक "त्रिपक्षीय संघर्ष" किन तीन राजवंशों के बीच चला?

A. गुर्जर- प्रतिहार, राष्ट्रकूट और चोल
B. पाल, राष्ट्रकूट और गुर्जर-प्रतिहार
C. गुर्जर-प्रतिहार, पाल और चोल
D. राष्ट्रकूट, चोल और पाल
उत्तर – B

प्रश्न-10. क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर कौन सा है?

A. प्रम्बानन मंदिर B. प्रीह विहार मंदिर
C. मुन्नेश्वरम् मंदिर D. अंकोरवाट
उत्तर - D

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- सबसे प्रतिष्ठित छवि सशस्त्र भगवान विष्णु की मूर्ति है। गुप्तोत्तर काल से संबंधित रॉक-कट मंदिरों की मूर्तिकला समान महत्व की है।

गुप्त वंश की गुफा मूर्तियाँ

- गुप्त काल को रॉक कट गुफाओं के लिए भी जाना जाता था। एलोरा की गुफाओं की मूर्तियाँ, एलिफेंटा की गुफाओं की मूर्तियाँ और अजन्ता की गुफाएं देखने लायक हैं।
- **पूर्ण रूप से आरंभिक गुप्त शैली में गुप्तकालीन मूर्तियों के सबसे पुराने नमूने मध्य प्रदेश राज्य के विदिशा और उदयगिरि गुफाओं के हैं**, जो पास में मौजूद हैं। इसका निर्माण 5 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मथुरा परम्परा में किया गया था।

गुप्त वंश की मंदिर मूर्तियाँ

- गुप्त शासकों की अवधि सार्वभौमिक उपलब्धि की आयु थी, एक शास्त्रीय युग, जैसा कि गोएत्ज़ के शब्दों में `जीवन का एक आदर्श, नायाब शैली' है।
- **गुप्त शासन की अवधि के दौरान धार्मिक वास्तुकला काफी लोकप्रिय थी।** इसलिए भारत में बौद्ध और जैन मंदिरों को पूरे साम्राज्य में खड़ा किया गया और महायान पैंथों की अधिक जटिल छवियां अस्तित्व में आईं।
- मंदिरों में मूर्तिक तत्व थे जैसे कि **`नागा'** और **`यक्ष'** को दो महान आस्तिक पंथों के देवताओं के रूप में स्वतंत्र पंथ छवियों के रूप में प्रतिस्थापित किया गया था। दशावतार मंदिर (देवगढ़) की मूर्ति, मध्य प्रदेश राज्य के जबलपुर में भीतरगाँव मंदिर की मूर्ति, वैष्णवती तिगावा मंदिर और अन्य भी गुप्तकालीन मूर्तियों के कुछ उदाहरण हैं।
- गुप्त काल के दौरान अन्य स्थापत्य चमत्कारों में पार्वती मंदिर (नचना) की मूर्ति, शिव मंदिर की मूर्ति (भुमरा) और विष्णु मंदिर (तिगावा) की मूर्ति शामिल हैं।
- इस तरह की मूर्तियों ने मथुरा और गांधार जैसे प्रतिष्ठित कला शैलियों के प्रभाव को अपनी शैली में प्रदर्शित किया। **गुप्त युग के दौरान सारनाथ के `स्थायी बुद्ध' और उत्तर प्रदेश में मथुरा के `बैठे बुद्ध' भी मूर्तिकला के अद्भुत नमूने हैं।**

भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य / नर्तक

शास्त्रीय नृत्य	संबंधित राज्य	प्रमुख नर्तक
भरतनाट्यम	तमिलनाडु	यामिनी कृष्णामूर्ति, टी बाला सरस्वती, रुक्मिणी देवी, सोनल मानसिंह, मृणालिनी साराभाई, वैजयन्ती माला, हेमामालिनी
कथकली	केरल	मृणालिनी साराभाई, गुरु शंकरन, नम्बूद्रीपाद, शंकर कुरूप, के सी पणिक्कर
मोहिनीअट्टम	केरल	भारती शिवाजी, तंकमणि शांताराव
कुचिपुड़ी	आंध्रप्रदेश प्रदेश	यामिनी कृष्णमूर्ति, राधा रेड्डी, राजा रेड्डी, स्वप्न सुन्दरी
कत्थक	उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान	बिरजू महाराज, अच्छन महाराज , गोपीकृष्ण , सितारा देवी , रोशन कुमारी , उमा शर्मा
ओडिसी	ओडिशा	प्रोतिमा देवी, संयुक्ता पाणिग्रही , सोनल मानसिंह, केलुचरण महापात्र, माधवी मुद्गल
मणिपुरी	मणिपुर	सूर्यमुखी देवी , गुरु विपिन सिंह

भारत के प्रमुख लोकनृत्य

राज्य	लोकनृत्य
असम	बिहू, खेलगोपाल , कलिगोपाल , बोई साजू , नटपूजा मीटू ।
पंजाब	कीकली, भाँगड़ा, गिद्दा
हिमाचल प्रदेश	जद्दा , नाटी , चम्बा, छपेली
हरियाणा	धमाल, खोरिया, फाग, डाहीकल
महाराष्ट्र	लेजिम, तमाशा, लावनी, कोली
जम्मू - कश्मीर	दमाली, हिकात, दण्डी नाच, राऊ, लडाखी
राजस्थान	गणगौर , झूमर , घूमर , झूलन लीला
गुजरात	गरबा, डाण्डिया रास, पणिहारी, रासलीला, लास्या, गणपति भजन
बिहार	जट - जाटिन, घुमकड़िया , कीर्तनिया , पंवारियाँ, सोहराई, सामा, चकेवा , जात्रा
उत्तर प्रदेश	डांगा, झींका, छाऊ, लुझरी, झोरा, कजरी, नौटंकी , थाली, जद्दा
केरल	भद्रकली, पायदानी, कुड़ीअट्टम, कालीअट्टम , मोहिनीअट्टम
पश्चिम बंगाल	करणकाठी, गम्भीरा, जलाया, बाउल नृत्य , कथि , जात्रा
नागालैण्ड	कुमीनागा, रेंगमनागा, लिम, चोंग, खेवा

मणिपुर	संकीर्तन, लाईहरीबा , थांगटा की तलम, बसन्तराम , राखाल
मिजोरम	चेरोकान , पाखुलिया नृत्य
झारखण्ड	सुआ, पंथी, राउत, कर्मा, फुलकी डोरला, सरहुल, पाइका , नटुआ , छऊ
ओडिशा	अग्नि, डंडानट, पैका, जदूर, मुदारी, आया, सवारी , छाऊ
उत्तराखण्ड	चांचरी / झोड़ा, छपेली, छोलिया, झुमैलो, जागर, कुमायूँ नृत्य, चौफल , छोलिया
कर्नाटक	यक्षगान, भूतकोला, वीरगास्से , कोडावा
आन्ध्र प्रदेश	घण्टा मर्दाला , बतकम्मा , कुम्मी , छड़ी, सिद्धि माधुरी
छत्तीसगढ़	सुआ करमा, रहस, राउत, सरहुल, बार , नाचा, घसिया बाजा , पंथी
तमिलनाडु	कोलट्टम , कुम्मी कारागम्
अरुणाचल प्रदेश	युद्ध नृत्य, **लायन एंड पीक डांस, रिखमपाड़ा नृत्य, बुईआ नृत्य, खांपटी नृत्य, बारडो छम, तापु नृत्य, दामिंडा डांस, पोंग नृत्य,**

प्रसिद्ध वाद्य यंत्र एवं वादक

वाद्य यंत्र	**वादक**
बाँसुरी	हरिप्रसाद चौरसिया, रघुनाथ सेठ, पन्नालाल घोष , प्रकाश सक्सेना, देवेन्द्र मुक्तेश्वर, प्रकाश बढ़ेरा, राजेन्द्र प्रसन्ना
वायलिन	बालमुरली कृष्णन, गोविन्दस्वामी पिल्लई, टी एन कृष्णन, आर पी शास्त्री, संदीप ठाकुर, बी शशि कुमार, एन राजम
सरोद	अली अकबर खाँ , अलाउद्दीन खाँ, अशोक कुमार राय, अमजद अली खाँ
सितार	पं. रविशंकर, उस्ताद विलायत खाँ
शहनाई	बिस्मिल्ला खाँ, शैलेश भागवत, अनंत लाल, भोलानाथ तमन्ना, हरिसिंह
तबला	अल्ला रक्खा, जाकिर हुसैन, लतीफ खाँ, गुदई महाराज, अम्बिका प्रसाद
हारमोनियम	रवीन्द्र तालेगांवकर, अप्पा जुलगावकर, महमूद ब्रह्मस्वरूप सिंह , एस. बालचन्द्रन, असद अली , गोपालकृष्ण
वीणा	पं. शिवकुमार शर्मा, तरुण भट्टाचार्य
सारंगी	पं. रामनारायण, ध्रुव घोष , अरुण काले, आशिक अली खाँ, वजीर खाँ, रमजान खाँ
गिटार	विश्वमोहन भट्ट, ब्रजभूषण काबरा, केशव तालेगांवकर, नलिन मजूमदार

लोककला शैलियाँ

शैली	राज्य
रंगोली	महाराष्ट्र / गुजरात
अल्पना	पश्चिम बंगाल
मण्डाना , मेहँदी	राजस्थान
अरिपन, गोदना	बिहार
रंगवल्ली	कर्नाटक
ऐपण	उत्तराखंड
अदूपना	हिमाचल
चौक पूरना	उत्तर प्रदेश
कलमकारी, मुगगु	आंध्रप्रदेश
फुलकारी	हरियाणा
सथिया	गुजरात
कोल्लम	तमिलनाडु
कालम	केरल

वास्तुकला शैलियाँ

शैली	विशेषता	नमूने
नागर शैली	चतुर्भुजाकार भवन	सूर्य मन्दिर (कोणार्क), जगन्नाथ मन्दिर (पुरी), शैली भवन कन्दरिया महादेव मन्दिर (खजुराहो) , दिलवाड़ा जैन मन्दिर (माउण्ट आबू)
द्रविड शैली	गोलाकार भवन	कैलाश मन्दिर (काँची), रथ मन्दिर (मामल्लापरम), शैली भवन वृहदेश्वर मन्दिर (तंजौर)
बेसर शैली	आयताकार भवन	कैलाश मन्दिर (एलोरा), दशावतार मंदिर (देवगढ़ शैली भवन झाँसी)

भारतीय चित्रकला

- भारतीय चित्रकारी के प्रारंभिक उदाहरण प्रागैतिहासिक काल के हैं, जब मानव गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी किया करता था। भीमबेटका की गुफाओं में की गई चित्रकारी 5500 ई.पू. से भी ज्यादा पुरानी है। 7वीं शताब्दी में अजंता और एलोरा गुफाओं की चित्रकारी भारतीय चित्रकारी का सर्वोत्तम उदाहरण है।
- भारतीय चित्रकारी में भारतीय संस्कृति की भांति ही प्राचीनकाल से लेकर आज तक एक विशेष प्रकार की

अध्याय – 4

गवर्नर, गवर्नर जनरल, वायसराय एवं उनके कार्य

गवर्नर जनरल:

- ब्रिटिश बौद्धिक जागरण; प्रेस; पश्चिमी शिक्षा।
- भारत में 1773 ई. से 1857 ई. के बीच तेरह गवर्नर जनरल आए। इनके शासनकाल में निम्नांकित मुख्य घटनाएं एवं विकास हुए-:

वारेन हेस्टिंग (1772 - 1785)

- **दोहरी शासन प्रणाली]Dual Government System (की समाप्ति) जो बंगाल के गवर्नर (राबर्ट क्लाइव द्वारा शुरू किया गया था) ।**
- **प्रथम गवर्नर जनरल बंगाल का वारेन हेस्टिंग्स था ।**
- 1773 ई. रेग्यूलेटिंग एक्ट ।
- 1774 ई. में रोहिल्ला युद्ध एवं अवध के नवाब द्वारा रुहेलखण्ड पर अधिकार।
- 1781 ई. का एक्ट (इसके द्वारा गवर्नर जनरल परिषद् एवं कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट न्यायिक अधिकार क्षेत्र का निर्धारण किया गया।
- 1782 में सालबाई की संधि एवं (1775-82) में प्रथम मराठा युद्ध।
- **1784 ई. का पिट्स इंडिया एक्ट।**
- **द्वितीय मैसूर युद्ध (1780-84)**
- सुरक्षा प्रकोष्ठ या घेरे की नीति का संबंध (वारेन हेस्टिंग्स एवं वेलेजली)
- 1785 ई. इंग्लैण्ड वापसी के बाद हाउस ऑफ लॉर्ड्स में महाभियोग का मुकदमा चलाया गया।
- 1784 ई. में सर विलियम जोंस एवं हेस्टिंग्स द्वारा एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाली स्थापना करना।

लॉर्ड कार्नवालिस -: 1786 - 1793 (1805)

- **1790 - 92 ई .में तृतीय मैसूर युद्ध ।**
- 1792 ई. में श्रीरंगपटनम की संधि
- **1793 ई. में बंगाल एवं बिहार में स्थायी कर व्यवस्था जमींदारी प्रथा की शुरुआत।**
- 1793 ई. में न्यायिक सुधार ।
- **विभिन्न स्तरों के कोर्ट की स्थापना ।**
- **कर प्रशासन को न्यायिक प्रशासन से अलग करना।**
- **सिविल सर्विस की शुरुआत।**
- प्रशासन तथा शुद्धिकरण के लिए सुधार।
- स्थायी बंदोबस्त प्रणाली को इस्तमरारी, जमींदारी, माल गुजारी एवं बीसवेदारी आदि नाम से भी जाना जाता है ।

सर जॉन शोर (1793 - 98):-

- स्थायी बंदोबस्त (1993) को शुरू करने में इन्होंने 'राजस्व बोर्ड अध्यक्ष के रुप में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। लेकिन उनके गवर्नर जनरल काल में कोई महत्त्वपूर्ण घटना नहीं हुई।

लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) :-

- लॉर्ड वेलेजली 1798 से 1805 तक बंगाल का गवर्नर जनरल रहा। उसके कार्यकाल में अंतिम मैसूर युद्ध लड़ा गया।
- **इस युद्ध के बाद मैसूर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधीन आ गया।**
- लॉर्ड वेलेजली के काल में **द्वितीय मराठा युद्ध लड़ा गया था** जिसमें अंग्रेजों की विजय हुई। यह कम्पनी राज के सबसे महत्त्वपूर्ण युद्धों में से एक था।
- पहले एंग्लो-मराठा युद्ध में मराठों की विजय हुई थी और दूसरे मराठा युद्ध में मराठों की पराजय हुई जिसका कारण मराठों के पास कोई अनुभवी और योग्य शासक न होना था।
- दूसरा मराठा युद्ध 1803 से 1805 तक लड़ा गया जिसके बाद मराठों का राज्य महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों में ही रह गया।
- औरंगाबाद, ग्वालियर, कटक, बालासोर, जयपुर, जोधपुर, गोहाद, अहमदनगर, भरोच, अजन्ता, अलीगढ़, मथुरा, दिल्ली ये सब अंग्रेजों के अधिकार में चले गए।
- सिंधिया और भोसले ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- **उसने सहायक संधि की शुरुआत** की जिसके तहत भारत के राजा ब्रिटिश सेना और अधिकारी को अपने राज्य में स्वीकार करेंगे, किसी भी विवाद में राजा ब्रिटिश सरकार को स्वीकार करेगा, वो ब्रिटिश के अलावा अन्य यूरोपियों को अपने यहाँ नौकरी पर नहीं रख सकता, इसके अलावा इस संधि में यह भी था कि राजा भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी का प्रभुत्व स्वीकार करेंगे ।
- लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि को सर्वप्रथम मैसूर के राजा (1799), तंजौर के राजा (1799), अवध के नवाब (1801), पेशवा (1801), बरार के राजा (1803), सिंधिया (1804), जोधपुर, जयपुर, बूंदी और भरतपुर के राजा थे।
- उसने 10 जुलाई 1800 को फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
- उसने 1799 में सेंसरशिप एक्ट पारित किए जिसका उद्देश्य फ्रांस की मीडिया पर नियंत्रण करना था।

नोट:

- सहायक संधि को स्वीकार करने वाला पहला शासक - अवध का नवाब (1765)
- वेलेजली की सहायक संधि को स्वीकार करने वाला प्रथम शासक - हैदराबाद निजाम (1798)

लॉर्ड मिन्टो प्रथम (1807-13):-

- मिन्टो के पहले सर जॉर्ज बार्लो वर्ष (1805-07) के लिए गवर्नर जनरल बना ।
- वेल्लोर विद्रोह (1806) ।
- रंजीतसिंह के साथ अमृतसर की संधि(1809)।

- 1813 ई. का चार्टर एक्ट ।

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823)

- लॉर्ड हेस्टिंग्स 1813 से 1823 तक भारत का गवर्नर जनरल रहा। **उसके काल में दो महत्त्वपूर्ण युद्ध गुरखा युद्ध और तृतीय एंग्लो-मराठा युद्ध लड़े गए।**
- गुरखा युद्ध 1814 से 1816 तक लड़ा गया जिसमें ईस्ट इंडिया कम्पनी की जीत और गोरखों की हार हुई।
- गुरखाओं ने ब्रिटिश कम्पनी के क्षेत्र पर आक्रमण किया था, इस कारण गुरखा युद्ध लड़ा गया।
- इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत और गुरखाओं की हार हुई जिसके बाद गुरखों को गोरखपुर, सिक्किम और अन्य इलाके कम्पनी को देने पड़े।
- इसके अलावा तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध भी लॉर्ड हेस्टिंग्स के समय पर लड़ा गया जिसमें अंग्रेजों की पूर्णतया विजय हुई।
- इस युद्ध के बाद मराठा साम्राज्य का अंत हो गया।
- पेशवा को कानपुर के निकट बिठूर भेज दिया गया और उसे 8 लाख प्रतिवर्ष पेंशन दी गयी। उसके पुत्र **नाना साहब पेशवा ने 1857 की क्रांति का कानपुर में नेतृत्व किया।**
- राजपूताना के राजाओं ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- **उसने सेंसरशिप एक्ट को हटा लिया और स्वतंत्र प्रेस को समर्थन दिया।**
- उसके काल में समाचार दर्पण नामक समाचार पत्र 1818 में शुरू हुआ।

लॉर्ड एमहर्स्ट (1823-28):-

- प्रथम आंग्ल बर्मा युद्ध (1824-26) इस युद्ध का अन्त 1826 ई. को हुई यांडबू की संधि से हुआ ।
- भरतपुर पर कब्जा (1826)।

लॉर्ड विलियम बैंटिक (1828 -1835)

- लॉर्ड विलियम बैंटिक 1828 से 1835 तक भारत का गवर्नर जनरल **रहा। उसका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य सती प्रथा का अंत था।**
- उसके काल में एंग्लो-बर्मा युद्ध के कारण ईस्ट इंडिया कम्पनी की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, उसने कम्पनी की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कार्य किए।
- उसने कम्पनी का खर्च 15 लाख स्टर्लिंग वार्षिक तक घटा दिया, मालवा में अफीम पर कर लगाया और कर व्यवस्था को मजबूत किया।
- उसने अपने काल में कई सामाजिक सुधार किए। **उसमें सती प्रथा और ठगी का अंत प्रमुख** था।
- सती प्रथा पर पहली रोक 1515 में पुर्तगालियों ने गोवा में लगाई, हालांकि इसका कोई फर्क नहीं पड़ा। इसके बाद 1798 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने कुछ हिस्सों में सती प्रथा पर रोक लगाई।
- राजा राममोहन राय ने 1812 से सती प्रथा के विरोध में आंदोलन शुरू किया, जिसके कारण 1829 में सती प्रथा पर रोक लगाई गई।
- राजपूताना में यह रोक बाद में लगी, **जयपुर स्टेट ने 1846 में सती प्रथा पर रोक लगाई।**
- उसने ठगों पर रोक लगाई। ठग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के स्थग से हुई है जिसका अर्थ होता है धूर्त। ठग प्राचीन भारत में लुटेरे होते थे। ठगों की शुरुआत मुस्लिम आक्रमणों के बाद हुई थी।
- ठगी पर रोक लगाने वाला योग्य अधिकारी कर्नल स्लीमन था। स्लीमन ने 1400 से अधिक ठगों को पकड़ा था। इसी प्रकार हजारों ठगों को पकड़ा गया, कई को फांसी दी गयी और कई को कारागार में बंद कर दिया गया।
- उसने अपने न्यायिक सुधारों के लिए जाना जाता है । उसने बिहार, बंगाल और उड़ीसा को 4 भागों में बांटा और कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, ढाका और पटना में 4 कोर्ट की स्थापना की गयी।
- उसने बंगाल प्रेसीडेंसी को 20 भागों में बांटा और प्रत्येक भाग में एक कमिश्नर नियुक्त किया।
- इलाहाबाद (प्रयागराज) में दीवानी और सदर निजामी अदालत शुरू की।
- मुंसिफ़ो और सदर अमीनों की नियुक्ति की गयी।

लॉर्ड ऑकलैंड (1836 - 42):-

- ऑकलैंड से पहले सर मैटकॉक जो कि एक छोटे समय लिए प्रशासन का प्रभारी बना था, ने 1835 में भारतीय प्रेसों को प्रतिबंधों से मुक्त कर दिया।
- प्रथम अफगान (1839-42), युद्ध में अंग्रेजों को भारी क्षति हुई एवं ऑकलैंड को वापस बुला लिया गया।
- रंजीत सिंह की मृत्यु (1839)
- 1839 ई. में इसने कलकता से दिल्ली तक ग्रैंड ट्रंक रोड (जी टी रोड) का मरम्मत करवाया ।
- इसी के शासन काल में **कलकता से दिल्ली तक (शेर शाह सूरी) के रोड़ का नाम बदलकर ग्रेंड ट्रंक रोड (जी टी रोड कर दिया गया ।**

लॉर्ड एलनबरो (1842 - 44):-

- प्रथम अफगान युद्ध की समाप्ति (1842)।
- सिंध पर कब्जा यानि सिंध विजय (1843)।
- ग्वालियर के साथ युद्ध (1843)।
- **दास प्रथा की समाप्ति (1843)।**

लॉर्ड हार्डिंग (1844-48):-

- प्रथम सिक्ख युद्ध (1845-46)।
- लाहौर की संधि (1846)।
- **स्त्री शिशु हत्या पर रोक।**
- **गोंड एवं मध्य भारत में मानव बलि प्रथा का दमन।**

लॉर्ड डलहौजी (1848 – 56):-

- द्वितीय सिख युद्ध (1848-49) एवं पंजाब पर कब्जा।

कांग्रेस ने विभाजन क्यों स्वीकार किया

- 1946-47 में भारत में साम्प्रदायिक तनाव अत्यंत उग्र रूप ले लिया था। जिन्ना प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस घोषित कर लड़ कर लेंगे पाकिस्तान का नारा दे रहे थे। फलतः साम्प्रदायिक दंगों की बाढ़ आ गयी और इसमें हजारों निर्दोष मारे जा रहे थे। अंतरिम सरकार इन दंगों को रोकने में विफल रही। इस तरह देश में अराजकता की स्थिति व्याप्त थी।
- ऐसी स्थिति में कांग्रेस को मौजूद दो बुराइयों अर्थात् विभाजन या गृहयुद्ध में से किसी एक को चुनना था। कांग्रेस ने विभाजन को कम बुराई वाला मान कर उसे स्वीकार किया। वस्तुतः विदोष भारतीयों की जीवन की रक्षा का लक्ष्य सर्वोपरी रखते हुए परिस्थितियों के स्वीकार किया, अनुसार विभाजन को स्वीकार किया ।
- **भारत और पाकिस्तान में सत्ता हस्तांतरण की योजना स्वीकार करने से भारत के विखण्डनीकरण से बचा जा सकता था।** दरअसल अनेक छोटी-बड़ी रियासतों को स्वतंत्र होने से रोकने के लिए विभाजन के प्रस्ताव को तुरंत स्वीकार करना जरूरी था। इसी संदर्भ में **पटेल ने कहा कि यदि हमने विभाजन स्वीकार नहीं किया तो भारत कई टुकड़ों में बंट जाएगा।**
- अंतरिम सरकार की विफलता से कांग्रेस ने सीख लेते हुए विभाजन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। दरअसल अंतरिम सरकार में शामिल मुस्लिम लीग सरकार से ही असहयोग कर रही थी। इससे जनता की सुरक्षा बाधित हो रही थी।
- **देश में प्रशासनिक एवं सैन्य ढाँचे की निरंतरता को बनाए रखने के लिए विभाजन को तत्काल स्वीकार किया गया। अन्यथा सेना नेतृत्वविहीन हो सकती थी और ऐसे में सैन्य तंत्र की स्थापना संभव थी।**
- **निष्कर्ष :-** कह सकते हैं कि कांग्रेस द्वारा विभाजन स्वीकार करना एक कठोर निर्णय था जो तत्कालीन परिस्थितियों के समाधान हेतु उठाया गया एक यथार्थ वादी कदम था। इतना जरूर है कि कांग्रेस ने हिंदू मुस्लिम दो राष्ट्र के आधार पर विभाजन को स्वीकार नहीं किया।

विभाजन के लिए कांग्रेस का उत्तरदायित्वः -

- कांग्रेस ने आरंभ में ही 1909 के मुस्लिम पृथक निर्वाचन प्रणाली का विरोध न कर के 'फूट डालो और राज करो' के ब्रिटिश सरकार की नीति को ही स्वीकार किया जो उसकी त्रुटि थी ।
- वस्तुतः जिस तरह से कांग्रेस ने 1905 में बंगाल विभाजन का तत्काल विरोध किया था और आगे चलकर दलित पृथक निर्वाचन प्रथककता का विरोध कर उसे रह करवाया था, उसी तर तरह 1909 के मुस्लिम निर्वाचन का विरोध के संदर्भ में करने में कांग्रेस असफल रही।
- इतना ही नहीं, 1916 के लखनऊ अधिवेसन में कांग्रेस ने मुस्लिम पृथक निर्वाचन प्रणाली को स्वीकार भी कर लिया जिससे अंततः साम्प्रदायिक राजनीति को बढ़ावा मिला और मुस्लिम लीग को महत्व बढ़ा।
- 1928 में नेहरू रिपोर्ट में मुस्लिम पृथक निर्वाचन को रद्द कर संयुक्त निर्वाचन की बात की गयी जो कांग्रेस की भूल साबित हुई क्योंकि इससे मुस्लिम समाज में उनके अधिकारों के होने की भावना मजबूत हुई।
- फलतः जिन्ना के नेतृत्व में प्रसूत्रीय मांग प्रस्तुत की गयी और यहाँ से जिन्ना साम्प्रदायिक राजनीति की ओर उन्मुख हुए जो अंततः विभाजन के मार्ग चलने के समान था।
- कांग्रेस ने मुस्लिम साम्प्रदायिक वाद निपटने के लिए मुस्लिम समाज के विकास का कोई आर्थिक सामाजिक कार्यक्रम घोषित नहीं किया बल्कि नेताओं के स्तर पर ही वार्ता के माध्यम से समाधान का प्रयास किया गया ।
- इसी क्रम में जिन्ना को मुस्लिम सम्प्रदाय के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में मान्यता प्रदान कर दी। इस तरह कांग्रेस ने उच्चवर्गीय चरित्र से,साम्प्रदायिकता का समाधान करना चाहा जिसका परिणाम विभाजन के रूप में सामने आया।
- देशी रियासतों का विलय

देशी रियासतों का एकीकरण (Integration of Princely States)

- देसी रियासतों की संख्याकितनी थी, इस बात पर भी विवाद था, लेकिन इतनी तो पक्की बात है कि रियासतों की कुल संख्या 500 से अधिक थी तथा इनके आकार, हैसियत एवं रियासती संरचना भी अलग-अलग प्रकार की थी। जहाँ एक तरफ कश्मीर व हैदराबाद जैसी बड़ी देसी रियासतें थीं, जो किसी यूरोपियन देश के बराबर थीं तो वहीं दूसरी तरफ इतनी छोटी रियासतें भी थीं, जिनके तहत दर्जन अथवा दो दर्जन गाँव आते थे।
- देसी रियासतें भारतीय इतिहास की लंबी राजनीतिक प्रक्रियाओं और ब्रिटिश नीतियों का परिणाम थीं। ये रजवाड़े अपनी ताकत और अपने स्वरूप के लिए पूरी तरह से अंग्रेजों पर निर्भर थे। भारत में कंपनी का शासन स्थापित होने के बाद देसी राज्यों को एक संधि करने पर मजबूर किया गया, जिसके तहत् ब्रिटेन को 'सर्वोच्च शक्ति' के रूप में स्वीकार किया गया। इस संधि के माध्यम से ब्रिटिश राज्य ने मंत्रियों और उत्तराधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार अपने हाथ में रखा था तथा उन्हें सैनिक सहायता उपलब्ध कराने का भी आश्वासन दे रखा था।
- इन देसी रियासतों में काठियावाड़ और दक्षिण में स्थित कुछ जागीरों को छोड़कर किसी भी देसी रियासत के पास समुद्र तट नहीं था। आर्थिक तथा राजनीतिक कारणों से भी इन रियासतों की निर्भरता अंग्रेजों पर और ज्यादा थी, इसका कारण यह था कि इन रियासतों को कच्चे माल, औद्योगिक उत्पाद और रोजगार के अवसरों के लिए ब्रिटिश भारत पर निर्भर रहना पड़ता था। कई देसी रियासतों के पास अपनी रेल-लाइन, अपनी मुद्रा तथा मुहर रखने की आज़ादी थी। इनमें से कुछ में आधुनिक उद्योग-धंधों का भी विकास हो चुका था तथा कुछ के पास आधुनिक शिक्षा की भी व्यवस्था थी। देश के लगभग 40% हिस्से में व्याप्त ये रियासत अपने स्वरूप में नितांत ही अलोकतांत्रिक थीं। इनमें से अधिकांश

- सन् 2000 में गठित छत्तीसगढ़, उत्तराखंड तथा झारखंड को 26वें, 27वें तथा 28वें राज्य के रूप में सम्मिलित किया गया ।
- वर्तमान में भारत में 29 राज्य तथा 7 संघ क्षेत्र हैं जिन्हें संविधान की प्रथम अनुसूची में शामिल किया गया ।

"सारांश"

- कैबिनेट मिशन (1946) के तहत एकीकृत संघ को केवल रक्षा, विदेशी मामलें एवं संचार के विषय दिए गए। अन्य सभी अधिकार प्रांतों को दिए गए।
- माउंटबेटन को 3 जून 1947 को योजना प्रस्तुत की जो भारत विभाजन के साथ सत्ता हस्तांतरण की योजना थी। इसे ही माउंटबेटन योजना के नाम से जाना जाता है।
- रेडक्लिफ की अध्यक्षता में सीमा विभाजन के लिए आयोग गठित हुआ । देश में प्रशासनिक एवं सैन्य ढाँचे की निरंतरता को बनाए रखने के लिए विभाजन को तत्काल स्वीकार किया गया।
- बी. आर. अम्बेडकर संविधान सभा के प्रारुप समिति के अध्यक्ष चुने गए थे।
- एस. सुब्रह्मण्यम अय्यर को दक्षिण भारत के महान वयोवृद्ध व्यक्ति के रूप में जाना जाता है।
- चन्द्रशेखर आजाद काकोरी षडयंत्र केस, लाहौर षडयंत्र केस से संबंधित थे।
- 'सारे जहां से अच्छा' गीत इकबाल मुहम्मद सर ने लिखा।
- मैडम भीखाजी कामा ने घोषणा की कि भारत एक गणराज्य होगा तथा हिन्दी उसकी राष्ट्रभाषा एवं राष्ट्रीय लिपि देवनागरी होगी। इन्हें 'भारतीय क्रांतिकारियों की माता' कहकर सम्मान दिया गया।
- रास बिहारी घोष उदारवानी नेता थे। इन्होंने उग्रपंथियों को घातक जनभोजक तथा अनुभारदायी आंदोलन कारी कहा।
- बंकिम चन्द्र चटर्जी ने भारत का राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम लिखा।
- रविन्द्र नाथ टैगोर नोबेल पुरस्कार पाने वाले प्रथम एशियाई थे। जलियाँवाला बाग हत्या कांड के बाद अंग्रेजों द्वारा दी गई नाइटहुड की उपाधि को त्याग दिया।
- जवाहर लाल नेहरू पंचशील नीति के प्रणेता तथा क्षेत्रीय समझौते के प्रबल विरोधी और गुट निरपेक्षता में विश्वास रखने वाले थे।
- दादाभाई नौरोजी 1892 में लिबरल पार्टी की टिकट पर ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स के लिए चुने जाने वाले प्रथम भारतीय थे।
- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर को गरीबों और दलितों का संरक्षक माना जाता था। इन्होंने नारी शिक्षा और विधवा विवाह कानून के लिए आवाज उठाई।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'परोपकारिणी सभा' की स्थापना की।
- विद्यासागर ने बाल विवाह रोकने के लिए शारदा बिल पेश किया।

प्रारंभिक परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1. प्रसिद्ध बारडोली किसान आंदोलन का नेतृत्व किया ?

A. डॉ. अम्बेडकर B. लाला लाजपत राय
C. सरदार पटेल D. महात्मा गाँधी
उत्तर – C

प्रश्न-2. 'दि इण्डियन एसोसिएशन' का संस्थापक कौन था?

A. सुरेन्द्र नाथ बनर्जी B. एम. जी. रानाडे
C. दादाभाई नौरोजी D. गोपाल कृष्ण गोखले
उत्तर – A

प्रश्न-3. काँग्रेस के संस्थापक कौन थे ?

A. ए. ओ. ह्यूम B. डब्ल्यू सी बनर्जी
C. लाला लाजपतराय D. एनी बिसेन्ट
उत्तर – A

प्रश्न-4. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई?

A. 1906 ई. B. 1890 ई.
C. 1914 ई. D. 1885 ई.
उत्तर – D

प्रश्न-5. कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष कौन थी ?

A. कादम्बिनी गांगुली B. सरोजिनी नायडू
C. एनी बिसेन्ट D. कमला नेहरु
उत्तर - C

प्रश्न-6. आर्य समाज की स्थापना किसने की ?

A. स्वामी दयानन्द
B. शंकराचार्य
C. स्वामी विवेकानन्द
D. पंडित जवाहरलाल नेहरु
उत्तर – A

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रश्न-7. भारत का प्रथम आधुनिक पुरुष किसे माना जाता है ?

A. नाना साहब
b. ए.ओ. ह्यूम
c. राजा राममोहन राय
d. स्वामी विवेकानन्द

उत्तर – c

प्रश्न-8. ब्रह्म समाज की स्थापना किसने की थी?

A. ईश्वरचंद्र
B. रविन्द्रनाथ टैगोर
C. विवेकानंद
D. राममोहन राय

उत्तर – D

प्रश्न-9. प्रार्थना समाज का संस्थापक था ?

A. आत्माराम पाण्डुरंग
B. केशवचन्द्र सेन
C. देवेन्द्रनाथ टैगोर
D. राज राममोहन राय

उत्तर – A

प्रश्न-10. शारदा अधिनियम के लड़कियों एवं लड़कों के विवाह की न्यूनतम आयु क्रमशः कितनी निर्धारित की गई थी ?

A. 14 वर्ष एवं 18 वर्ष
B. 15 वर्ष से 21 वर्ष
C. 16 वर्ष एवं 22 वर्ष
D. 12 वर्ष एवं 16 वर्ष

उत्तर – A

मध्य प्रदेश का इतिहास

अध्याय – I

मध्य प्रदेश के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ और प्रमुख राजवंश

मध्य प्रदेश का इतिहास :-

ऐतिहासिक स्रोत – (Historical Sources) ऐतिहासिक स्रोतों की दृष्टि से मध्य प्रदेश को तीन भागों में बांटा जाता है।

(1) प्रागैतिहासिक काल – जिसका लिखित विवरण उपलब्ध नहीं है।

(2) आद्यय ऐतिहासिक काल – जिसके लिखित विवरण को नहीं पढ़ा जा सका है।

ऐतिहासिक काल – जिसके लिखित विवरण को पढ़ा जा सका है।

(1) प्रागैतिहासिक काल –

- मध्य प्रदेश के विभिन्न भागों में किए गए उत्खनन और खोजो में पूरा प्रागैतिहासिक सभ्यता के चिन्ह मिले हैं।
- आदिम प्रजातियां नदियों के किनारे और कन्दराओ में रहती थी।
- मध्यप्रदेश के भोपाल, रायसेन, छनेरा, नेयावर, भोजवाडी, महेश्वर, देहगांव, बरखेड़ा हण्डिया, कबरा, सिघनपुर तथा होशंगाबाद इत्यादि स्थानों पर आदिम प्रजातियों के रहने के प्रमाण मिले हैं।
- होशंगाबाद जिले की गुफाओं, रायसेन जिले की भीमबेटका की कंदराओं तथा सागर के निकट पहाड़ियों से प्रागैतिहासिक शैलचित्र प्राप्त हुए हैं।
- **प्रागैतिहासिक काल को तीन कालो में विभाजित किया जाता है –**
- **पाषाण काल**
- **मध्य पाषाण काल**
- **नवपाषाण काल**

(1) पाषाण काल (stone age) :-

- मध्यप्रदेश में नर्मदा घाटी, चंबल घाटी, बेतवा घाटी, सोनार घाटी, भीमबेटका की गुफाएं आदि प्रमुख पाषाण कालीन स्थल है।
- इस काल के औजार बिना बेंट अथवा लकड़ी के बेंट और हस्तकुठार के अतिरिक्त खुरचनी, युष्टिकुठार, तथा क्रोड मध्य प्रदेश के विभिन्न स्थलों पर पाए गए है।
- भीमबेटका की गुफाएं मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित है। ये गुफाएं आदि मानव द्वारा निर्मित शैलाश्रयी व शैलचित्रों प्रवास के लिए प्रसिद्ध है।
- भीमबेटका में लगभग 760 गुफाओं में 500 गुफाएँ चित्रों द्वारा सुसज्जित है।

- इस स्थल को मानव विकास का प्रारंभिक स्थान माना जाता है।
- यूनेस्को द्वारा वर्ष 2003 में भीमबेटका को विश्व धरोहर स्थल के रूप में घोषित किया गया।

(2) मध्यपाषाण काल (Megalithic age) :-

- मध्य पाषाण काल की सभ्यता नर्मदा, चंबल बेतवा एवं उनकी सहायक नदियों की घाटियों में विकसित हुई थी।
- इस काल में जैस्पर, चर्ट, क्वार्टज इत्यादि उच्च कोटि के पत्थरों से बने औजारों में खरचुनियाँ, नोंक व बेधनी प्रमुख थे
- इस काल में औजारों का आकार छोटा होना प्रारंभ हुआ।
- मध्य प्रदेश में इस काल की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल आदमगढ़ (होशंगाबाद) है।

(3) नवपाषाण काल (Neolithic Age):

- मध्य प्रदेश के सागर, जबलपुर, दमोह, होशंगाबाद तथा छतरपुर जिलों में नव पाषाण कालीन औजार प्राप्त हुए।
- इन औजारों में सेल्ट, कुल्हाड़ी असूला इत्यादि प्रमुख रूप से शामिल हैं।
- इस काल में कृषि पशुपालन गृह निर्माण एवं अग्नि प्रयोग जैसे क्रांतिकारी कार्यों को अपनाया गया था।

आद्य ऐतिहासिक / ताम्र पाषाण काल :-

- ताम्रपाषाण काल वह काल है जब इंसानो ने पत्थर के साथ-साथ में का इस्तेमाल करना शुरू किया और औजारों में तथा बर्तनों में एक नया आकार एवं मजबूती दी।
- ताम्र पाषाण काल की सभ्यता मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा सभ्यता के समकालीन थी जो नर्मदा घाटी क्षेत्र में विकसित हुआ।
- नवदाटोली, कायथा (उज्जैन) नागदा बरखेड़ा (भोपाल) एंरण इत्यादि क्षेत्र इस इलाके के प्रमुख केंद्र थे।
- ताम्र पाषाण युग के अवशेष मालवा क्षेत्र के नागदा, नावदाटोली, महेश्वर, कायथा, आवरा, एरण तथा बेसनगर आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं।
- इन उत्खननों के अतिरिक्त मध्य प्रदेश के मंदसौर, शाजापुर, इंदौर, खरगोन, धार, उज्जैन, जबलपुर, देवास तथा भिण्ड जिलों में की गई खोजों में लगभग 30 ऐसे स्थल प्राप्त हुए हैं। जहाँ ताम्र पाषाण युगीन अवशेष मिले हैं।

ताम्रयुगीन स्तर-

- a. नवदाटोली - 1660 ई.पू. से 1380 ई.पू.
- b. कायथा - 2015 ई. पू. से 700 ई.पू.
- c. एरण - 2000 ई.पू. से 700 ई.पू.
- d. बेसनगर - 1100 ई.पू. से 900 ई.पू.
- 1932 ई. में **कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय** के एक दल ने ताम्र पाषाण सभ्यता के चिह्न मध्य प्रदेश के जबलपुर और बालाघाट (गुरिया) जिलों से प्राप्त किये थे। डॉ. एच.डी. सांकलिया ने नर्मदा घाटी के महेश्वर, नवदाटोली, टोढ़ी और डॉ. बी. एस. वाकणकर ने नागदा - कायथा में ताम्र पाषाण कालीन उपकरण खोजे थे।
- एक विशेष प्रकार की वृषभ मूर्ति मिली है। कायथा से 29 कांस्य चूड़ियां प्राप्त हुई हैं। ऐसे ही साक्ष्य महेश्वर व नवदाटोली से भी प्राप्त हुए हैं। मालवा मृद्भांड के उत्कृष्ट उदाहरण नवदाटोली से प्राप्त हुए हैं। महत्वपूर्ण है कि नवदाटोली से वृषभ मूर्ति के अलावा चंचुयुक्त पक्षी की मूर्ति प्राप्त हुई है।

पुरातात्विक स्थल-

- वी.एस. वाकणकर ने 1956-1957 तक म.प्र. के अनेक शैलचित्रों की खोज करके 'रॉकशेल्टर इन मध्य प्रदेश' शीर्षक के अंतर्गत चित्रों का वर्णन किया। वहीं 1977 में एम.डी. खरें ने विदिशा के पास शैलचित्रों को खोजा ।
- मध्य प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर शैलाश्रय प्राप्त हुए हैं जिनकी भीतरी छतों और दीवालों पर अनेक ढंग की रोचक चित्र - रचना मिली है। मध्य प्रदेश में चित्रित शैलाश्रय सागर, रीवा, मंदसौर, जबलपुर, होशंगाबाद - बैतूल क्षेत्र (धुनिकाफ, धुधुकाफ, ढूढाआम, सकलीडीह व रामपुर भतुडी), रायगढ़, सीहोर, भोपाल (बेरागड, हल्लूमाता, पिपल्या जुन्नारदार, कोठा कराड, शिलाजीत कराड, गुफा मंदिर, मनुआभान,टेकरी, गोधरमउ, धरमपुरी पहाड़ी, डिगडिगा पहाड़ी, राजाबांधा पहाड़ी, गणेश घाटी)।
- 1922 में होशंगाबाद के आदमगड शैलचित्र पहली बार प्रकाश में आए। होशंगाबाद से भी एक गुफा चित्र प्राप्त हुआ है जिसमें एक 'जिराफ' का चित्र बना हुआ है। गार्डन ने पंचमढ़ी में महादेव की पहाड़ियों में अनेक शैलचित्र खोजे थे।

ऐतिहासिक या प्राचीन काल :-

वैदिक युग :-

- इस काल का इतिहास 1500-600 ईसवी पूर्व के आस-पास शुरू होता है।
- आर्य उत्तर वैदिक (1000-600 ई. पू०) के समय में ही विंध्यांचल को पार कर मध्यप्रदेश में आये थे।
- ऐतरेय ब्राह्मण में जिस निषाद जाति का उल्लेख है, वह मध्य प्रदेश के जंगलों में निवास करती थी।

महापाषाण युग :-

- 1700-1000 ई. पू. की समय अवधि में मध्यप्रदेश में दक्षिण की महापाषाण संस्कृति का प्रभाव भी देखा जाता है।
- दक्षिण भारत के कुछ स्थलों से प्राप्त विशाल पाषाण समाधियों को महापाषाण स्मारक (मंगालिथ) कहा जाता है।
- सिवनी व रीवा जिले से ये स्मारक मिले हैं।

लौह युगीन संस्कृत :-

- लौह युग के धूसर चित्रित मृद्भांड मध्यप्रदेश के श्योपुर, ग्वालियर, मुरैना एवं भिंड से प्राप्त हुए हैं।

कोकल प्रथम के 18 पुत्र थे। इसी के समय से त्रिपुरी के कलचुरियों की वंशावली मिलती है।

शंकरगण द्वितीय-

- कोकल का पुत्र तथा उत्तराधिकारी शंकरगण द्वितीय (890-910 ई.) गद्दी पर बैठा। उसने मुग्धतुंग, प्रसिद्धधवल व रणविग्रह विरुद्ध धारण किए। बिलहरी (जबलपुर) तथा बनारस अभिलेखों के अनुसार उसने समुद्र तट के राज्यों को जीता, दक्षिण कौसल के बाणवंशी राजा विक्रमादित्य जयमेरु से पालि के आस-पास का प्रदेश छीना।

बालहर्ष-

- शंकरगण के पश्चात् उसका उत्तराधिकारी पुत्र बालहर्ष (910-915 ई.) हुआ।

केयूरवर्ष या युवराजदेव प्रथम-

- बालहर्ष की मृत्यु के पश्चात् छोटा भाई केयूरवर्ष या युवराजदेव प्रथम (915-945 ई.) था। उसके आमात्य गोललाक के अद्यावधि प्राप्त तीन अभिलेख बांधवगढ़ व एक गोपालपुर से प्राप्त हुआ है। युवराजदेव प्रथम ने चालुक्यवंशी अवनि वर्मा की पुत्री नोहला से विवाह किया जो उसकी पटरानी बनी।
- महत्वपूर्ण है कि धंग के खजुराहों अभिलेख में, युवराजदेव प्रथम को प्रसिद्ध राजाओं के मस्तक पर पैर रखने वाला व विद्वशालभंजिका में उज्जयिनीभुजंग कहा गया है। उल्लेखनीय है कि लक्ष्मणराज द्वितीय के कारीतलाई शिलालेख के अनुसार युवराजदेव का प्रधानमंत्री भारद्वाज वंशी भाकमिश्र / भमिश्र था।

लक्ष्मणराज द्वितीय-

- युवराजदेव प्रथम व रानी नोहला का पुत्र लक्ष्मणराज द्वितीय :. (945-970 ई.) गद्दी पर बैठा । लक्ष्मणराज द्वितीय ने भी अपनी विस्तारवादी नीति के तहत वंग, पाण्डय, लाट गुर्जर, कश्मीर आदि देशों के राजाओं को पराजित किया तथा दक्षिण कौसल पर चढ़ाई की।
- उसने उड़ीसा पर आक्रमण कर कालियानाग की रत्नजड़ित स्वर्ण मूर्ति छीनकर सौराष्ट्र के सोमनाथ मंदिर को अर्पित कर पूजा की। इसकी विजयों की जानकारी गोहरवा व बिल्हारी लेख से मिलती हैं।
- **शंकरगण तृतीय-**
- लक्ष्मणराज द्वितीय का उत्तराधिकारी शंकरगण तृतीय (970-980 ई.) था। यह चंदेलों से हुए युद्ध में चंदेल मंत्री वाचस्पति द्वारा मारा गया। यह केवल वैष्णव मतानुयायी था।
- **युवराज देव द्वितीय-**
- शंकरगण तृतीय के पश्चात् उसका अनुज युवराजदेव द्वितीय (980-990 ई.) शासक बना। उदयपुर प्रशस्ति में कहा गया है कि वाक्पति ने इसे हराकर त्रिपुरी को विजय किया ।

कोकल्ल द्वितीय-

- युवराजदेव द्वितीय के बाद कोकल्ल द्वितीय (990-1015 ई.) शासक हुए। इसके काल में कलचुरियों ने अपनी खोई प्रतिष्ठा को प्राप्त किया। यह शैव अनुयायी था, इस समय गुर्गी (रीवा) मत्तमयूर शाखा का महत्वपूर्ण केंद्र था ।

गांगेयदेव-

- गांगेयदेव (1015-1041 ई.) कोकल्ल द्वितीय का उत्तराधिकारी पुत्र बड़ा प्रतापी और महत्वाकांक्षी था। उसने भोज परमार तथा राजेन्द्र चोल के साथ एक संघ बनाकर चालुक्य नरेश जयसिंह द्वितीय (1015 - 1042 ई.) पर आक्रमण कर दिया, किन्तु दुर्भाग्यवश सफलता प्राप्त नहीं कर सका।
- वह भोज परमार से भी युद्ध में हार गया (गांगेयभंगोत्सव) तथा बुंदेलखण्ड (विद्याधर चंदेल) में भी वह सफल नहीं हो सका किन्तु उसने उत्कल को अपने अधीन कर लिया और बनारस तथा भागलपुर तक राज्य विस्तार किया ।

लक्ष्मीकर्ण / कर्ण-

<u>राजनीतिक उपलब्धियां-</u>

- गांगेयदेव का पुत्र तथा उत्तराधिकारी लक्ष्मीकर्ण (1041-1072 ई.) हुआ। वह जीवनपर्यन्त युद्ध में व्यस्त रहा। उसने इलाहाबाद तथा पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्से पर अधिकार कर लिया। दक्षिण के चोल, कुंतल तथा पांड्य नरेशों से भी युद्ध हुआ, किन्तु राज्य विस्तार करने में सफल नहीं हो सका।
- अपने प्रारंभिक समय में उसने मगध पर आक्रमण किया तथा कई बौद्ध विहारों को नष्ट कर दिया। उसकी अन्य विजयों की जानकारी रीवा प्रशस्ति (1048-1049 ई.) से मिलती है।

सांस्कृतिक उपलब्धियां-

- कर्ण ने वाराणसी में एक उत्तुंग शिवालय, कर्णावती अग्रहार व कर्णतीर्थ घाट बनवाया। उसकी राज्यसभा में वल्लण,नाचिराज, कर्पूर, करकण्डचरिउ के रचयिता कनकमार व विद्यापति जैसे कवि थे।
- विद्यापति, नचिराज, कर्पूर व वल्लण कलचुरि कर्ण के आश्रित कवि थे। महत्वपूर्ण है कि कर्ण के दरबार में ही गंगाधर कवि था, जिसके श्लोक श्रीधर के सुदुक्तिकर्णामृत में लिए गए हैं।

यशकर्ण-

- लक्ष्मीकर्ण का उत्तराधिकारी यशकर्ण (1073-1123 ई.) हुआ। यशकर्ण के अभिलेख खैरहा, बरही व जबलपुर से प्राप्त हुए हैं। अभिलेखों में उसे जंबूद्वीप - रत्न- प्रदीप कहा गया है। यशकर्ण ने शैव संयासी रुद्रशिव को करण्डग्राम व करण्डगताल ग्राम दान दिए ।

गयाकर्ण-

- यशकर्ण का उत्तराधिकारी (1123-1153 ई.) हुआ। उसके राजत्वकाल में पाशुपत संयासी भावब्रह्म ने त्रिपुरी में एक शिव मंदिर बनवाया ।

नरसिंह-

- गयाकर्ण का उत्तराधिकारी (1153 - 1163 ई.) नरसिंह हुआ। इसके भेडाघाट अभिलेख में चर्चा है कि नरसिंह की माता अल्हणदेवी ने भेडाघाट में वैद्यनाथ मंदिर बनवाया ।

- बैगा की उपजातियां - बिझवार, नरोतिया,भरोतिया, रेमेना, काढमैना, राय
- बैगा जनजातियों के विवाह - 1. मंगनी या चंढ विवाह, 2. उठवा विवाह 3.चोर विवाह 4. पैंदुल विवाह 5. लमसेना 6. उधारिया
- बैगा जनजाति के नृत्य - 1.करमा 2.सैला 3. परधोनी 4. फाग

कोरकू जनजाति –

- कोरकू मुंडा अथवा कोल जनजाति की एक प्रशाखा है। कोरकु का शाब्दिक अर्थ है मनुष्यों का समूह
- यह मध्यप्रदेश में छिंदवाड़ा, बैतूल, होशंगाबाद हरदा, खंडवा, जबलपुर आदि जिलों में रहते हैं।
- कोरकू अपने गांव के चारों ओर बांस की बाड लगाते हैं। इनके घर अपने सामने पक्तिबद्ध होते हैं।
- कोरकू समाज पितृसत्तात्मक एवं टोटम पर आधारित समाज है।
- इन के दो प्रमुख वर्ग होते हैं राजकोरकू और पठारिया।आवाज को और को सामाजिक दृष्टि से उच्च माने जाते हैं इसके अलावा अतिरिक्त चार अन्य वर्ग रुम आपूर्तिया दुलारिया तथा दो भाई होते हैं भूमिया पडियार कुर्तों के सम्मानित व्यक्ति होते हैं सगोत्र विवाह निषेध आधार दामाद प्रताप विधवा विवाह मधुमेह का प्रचलन है कोर को जनजातियों की विवाह लम जाना पड़ता या घर दामाद थोड़ा रानी बाजी पड़ता हटवा कथा।
- आजीविका का मुख्य साधन कृषि एवं आगे टर्न हैं इसके अतिरिक्त पशुपालन मत्स्य एवं वनोपज संग्रह भी इनके जीवन यापन के साधन हैं को रोको स्वयं को हिंदू मानते हैं यह लोग महादेव और चंद्रमा की पूजा करते हैं डोंगर देव भगवा देव एवं गांव के देवता पूर्वक देवता है यह लोग गुंडी पड़वा दशहरा दिवाली एवं होली जैसे हिंदू त्यौहार मनाते हैं मृतक संस्कार में चंद्रोली पड़ता प्रचलित है जिसमें मृतकों को दफनाना जाता है और मृतक की स्मृति में लकड़ी का एक स्तंभ काटते हैं वर्गों की उप जनजाति है नहा लो वासी निरुमा भवारी पांड्या मासी महुआ यह अपराध भरोसा होता क्या बावरिया बेतूल जिले के कुलपति बावरिया कहते हैं अमरावती जिले के कोर को कहते हैं भदोरिया पंचवटी क्षेत्र में रहने वाले कहते हैं

कोल जनजातियां :-

- कोल मुंडा समूह की एक अत्यंत प्राचीन जनजाति है जिसका मूल्य स्थान मध्य प्रदेश के रीवा जिले का कुराली क्षेत्र है।
- कोल जनजाति मध्यप्रदेश में रीवा, सतना,जबलपुर,सीधी, शहडोल,जिला में पाई जाती है।
- कोल लोग संगीत के शौकीन होते हैं तथा इनके घरों में अनेक वाद्य यंत्र पाए जाते हैं।
- कोल समाज पितृसत्तात्मक एवं गोत्रों में विभक्त है।इनमें टोटम का प्रचलन नहीं है।
- पत्नी की मृत्यु पर विधवा अवस्था को तलाकसुधा स्त्री से विवाह की प्रथा है।
- कोल शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों होते हैं।लेकिन यह गाय और शेर का मांस नहीं खाते हैं।
- कोल जनजाति दो उपवर्ग हैं रोतिया एवं रोतेले अन्य उपवर्ग दशोरथा, कुरिया, एवं कगवारिया है।
- दहका कोल का प्रशिद्ध आदिम नृत्य है।
- कोल अधिकांशत खेतिहर मजदूर होते हैं। पुरुष केवल बुवाई का कार्य करते हैं।
- कोल हिंदू देवी देवताओं की पूजा करते हैं इनमें फसलों की रक्षा के लिए सूर्य, चंद्रमा, पवन तथा इंद्र की पूजा की जाती है।
- मृत्यु पर दफनाने का रिवाज है।
- इनकी पंचायत को(गोहिया पंचायत) कहा जाता है।

भारिया जनजातिः-

- भारिया गोंड जनजाति की एक शाखा है जो द्रविडियन परिवार की जनजाति मे शामिल है।
- भारिया मध्य प्रदेश के जबलपुर, छिदवाडा जिलों में रहते हैं।
- छिंदवाड़ा जिले के पातालकोट क्षेत्र के भारियाओ को अत्यंत पिछड़ी जनजाति घोषित किया गया है।
- भारिया जनजातियों के गांव को ढाना कहते हैं।
- भारियाओ की बोली थरनोटी है।गीत कथा एवं पहेलियों का इनमे अत्यधिक प्रचलन है।
- इनका मुख्य भोजन पेज है। महुआ और आम की गुठली से बनी रोटी तथा कंदमूल व सब्जियां भी इनके भोजन में शामिल हैं।
- इनमें भूमका, पडिहार एवं कोटवार व्यक्तियों का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

भारिया स्वयं को हिंदुओं से प्रभावित मानते हैं प्रमुख देवता - बूढ़ा देवा, दूल्हा देवा तथा नागदेव आदि हैं।

भारिया की उपजातियां- (1) भूमियां (2) भूईहार (3) पेंडो

भारिया के विवाह -(1) मँगनी विवाह (2) लमसेना विवाह (3) राजी बाजी विवाह (4) विधवा विवाह

भारिया के पर्व त्यौहार -(1) बिदरी पूजा (2) नवाखानी (3) जवारा (4) दिवाली (5) होली

भारिया के नृत्य - (1) भड़म (2) करया (3) सैतम (4) सैला

सहरिया जनजातिः-

- सहरिया का अर्थ है शेर के साथ रहने वाला।
- यह कोलेरियन परिवार की एक जनजाति है, जिसे अत्यंत पिछड़ी घोषित किया गया।
- यह मध्य प्रदेश के गुना, ग्वालियर, शिवपुरी, मुरैना, विदिशा और बुँदेलखंड में निवास करती है।
- सहरिया अपने आपको भीलो का छोटा भाई कहलाने में गौरव का अनुभव करते हैं।

अध्याय- 12

मध्यप्रदेश : विविध

प्रमुख अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान	
महिला एवं बाल विकास प्रशिक्षण संस्थान	बैतूल
ड्राइवर ट्रेनिंग सेंटर	सालीमेटा लिंगा गाँव (छिंदवाड़ा)
राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण संस्थान (प्रस्तावित)	शिवपुरी
नेशनल टेक्निकल रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन (प्रस्तावित)	भोपाल
दलहन अनुसंधान केन्द्र (प्रस्तावित)	अमलाहा (सीहोर)
गन्ना अनुसंधान केन्द्र (प्रस्तावित)	बोहानी (नरसिंहपुर)
भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.आई.टी.)	भोपाल (प्रस्तावित)
कृषि का अंतर्राष्ट्रीय रिसर्च सेंटर (प्रस्तावित)	अमलाहा (सीहोर)
राष्ट्रीय यातायात प्रबंध एवं शोध संस्थान	भोपाल (प्रस्तावित)
थलसेना की प्रशिक्षण कमाण्ड (1991 में शामिल)	महू
मवेशी अनुसंधान केन्द्र (प्रस्तावित)	सीहोर
स्किल युनिवर्सिटी (प्रस्तावित)	इंदौर
बाल डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट फॉर रूरल वूमन	इंदौर
स्कूल ऑफ एक्सीलेंस फॉर आई (प्रस्तावित)	इंदौर
जैविक कपास अनुसंधान केन्द्र (प्रस्तावित)	खण्डवा
भारतीय पर्यटन एवं यात्रा संस्थान (1983)	ग्वालियर
प्रौद्योगिकी अभिकल्पना एवं विनिर्माण संस्थान	जबलपुर
डॉ. वी. एस. वाकणकर पुरातत्व शोध संस्थान	भोपाल
दीनदयाल शोध संस्थान	चित्रकूट
राष्ट्रीय कामधेनु ब्रीडिंग सेंटर (प्रस्तावित)	कीरतपुर (इटारसी)
भारतीय विदेश व्यापार संस्थान विश्वविद्यालय	भोपाल (प्रस्तावित)
राज्य स्तरीय ज्ञान प्रबंध केन्द्र (प्रस्तावित)	भोपाल
जयप्रकाश नारायण सेंटर फॉर एक्सीलेंस इन ह्यूमेनिटी (प्रस्तावित)	भोपाल
फुटवेयर डिजाइन और विकास संस्थान (2013)	हरीपुर (गुना)
इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च संस्थान	भोपाल
एकीकृत पुलिस संस्थान	भोपाल
वन्यजीव फोरेंसिक एवं स्वास्थ्य केन्द्र	जबलपुर
प्रदेश का पहला जैन शोध दर्शन संस्थान	छिंदवाड़ा
मध्यप्रदेश का पहला वाइल्ड लाइफ अवेयरनेस सेन्टर	रालामण्डल (इंदौर)
एनिमल सोरोगेसी लैब	भोपाल
पहला नर्सिंग पी.एच.डी. शोध केन्द्र	इंदौर

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/yqtoiy 1 web.- https://bit.ly/3AAJwpU

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
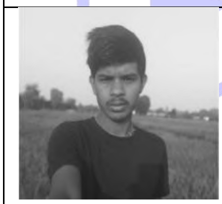	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
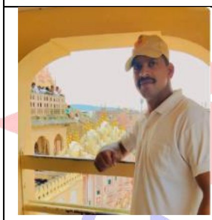	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others......

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें - https://wa.link/yqtoiy

Online order करें - https://bit.ly/3AAJwpU

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE